

संपादक

अभिजीत कुमार, 9431006107

समाचार संपादक

अखिलेश कुमार, 9431089053

राजनीतिक संपादक

प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337

मुकेश कुमार सिंह 9534207188

सहायक संपादक

प्रभाकर कुमार गय/एस. एन. श्याम

संपादकीय सलाहकार

राजीव कुमार सिंह 9431210181

कॉन्सेप्ट एडिटर

अनूप कुमार शर्मा, 7004821433

विधि सलाहकार

वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

बिहार ब्लूग

अनूप नारायण सिंह

मुख्य संवाददाता

सोनू सिन्हा, 9431006189

आशीष कुमार

जिला ब्लूग

बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316

अमित सिंह, 9430595995

भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,

(ब्लूग चीफ), 9334114515

सहरसा : आशीष कुमार ज्ञा, 9430633262

सारण प्रमंडल : सचिन पर्वत, 9430069987

समस्तीपुर : मृत्युजय कुमार ठाकुर, 8406039222
राजेश कुमार, 8539007850

चांदन : अमोद कुमार दूबे : 8578934993

हसनपुर : विजय चौधरी : 9155755866

दरभंगा : जाहिद अनवर : 8541849415

बाराहाट : हेमत कुमार (संवाददाता)

सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संवाददाता)

बिहार-झारखण्ड : अभिनव कुमार

9771654511

दिल्ली : नवल बत्स

ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318

प्रधान कार्यालय

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर,
काली मंदिर रोड नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)

मो.- 9431006107, 9939815347

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली
मंदिर रोड नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से
प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली,
डीएन दास लेन, पटना-800 004, से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विवाद के लिए
लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे। इसके लिए संपादक से
सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों
का निवाटा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक



डॉ. संजय मयूर

राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी
माजपा

जय जयराम सिंह

समाजसेवी

चर्चित बिहार

वर्ष : 6, अंक : 8, अप्रैल 2019, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दू मासिक पत्रिका

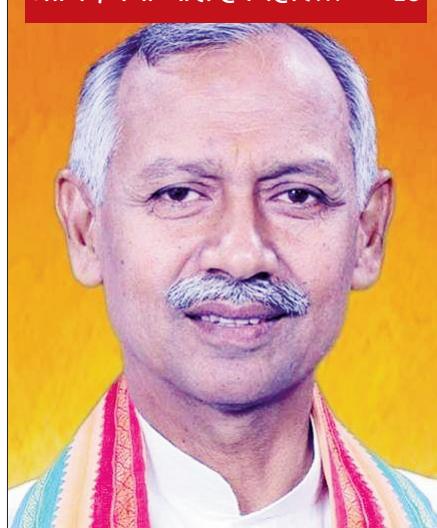


बिहार में उम्मीदवारी ने एनडीए को दिलाई शुरूआती बढ़त...

7

13

16



जानिए क्यों खास है बिहार...

31



राजनीति के पुराने धुरंधर...

16



मौका मिला है, अब बता देंगे... 35

मतदाता के नज्ज पर हाथ रखने का भ्रग

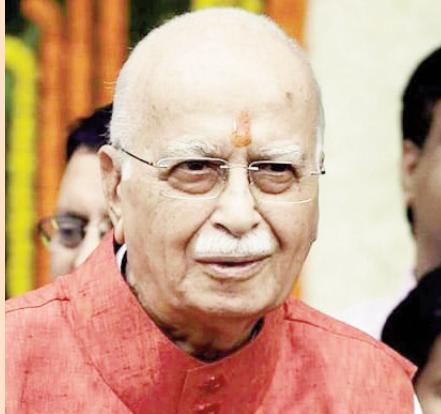
मरीज के बुखार की जांच अक्सर डाक्टर उसकी नब्ज की रफ्तार देखकर करते हैं। कुछ चिकित्सक, विशेषकर आयुर्वेद वाले, कभी-कभी इस नब्ज से बीमारी का पता लगाने का दावा भी करते हैं। इस सबके चलते जनता की नब्ज पर हाथ रखना राजनीति का एक मुहावरा बन गया होगा, इस नब्ज की रफ्तार को समझने वाले राजनेता को अक्सर अच्छा नेता माना जाता है। हमारे राजनेताओं की समझ और दावे अक्सर गलत सिद्ध होते हैं। चुनाव-परिणाम तो इस बारे में स्थिति स्पष्ट करते ही हैं, चुनाव-प्रचार के दौरान जनता का मूड भी कभी-कभी इसका संकेत दे देता है। चतुर राजनेता हवा का रुख पहचान लेते हैं, पर अक्सर देखा यह गया है कि अपने बाकी दावों की तरह ही जनता की नब्ज पहचानने का हमारे राजनेताओं का दावा भी कुल मिलाकर झूठ ही होता है। महत्वपूर्ण तो होती है मतदाता के मन की बात। इसीलिए इसकी थाह पाने की तरह-तरह से कोशिश होती है। सर्वेक्षण किये जाते हैं, अनुमान लगाये जाते हैं, तरह-तरह के चुनावी गणित और समीकरण बनाये और बिगड़े जाते हैं। अक्सर वे कोशिशें मतदाता की कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं। इसका एक बड़ा कारण यह भी होता है कि राजनेता और राजनीति को समझने का दावा करने वाले, अक्सर अपनी बनायी दुनियाओं में जीते हैं। अक्सर वे अपने पूर्वाग्रहों से उबर नहीं पाते, और अक्सर वे अति आत्मविश्वास के शिकार हो जाते हैं। कभी-कभी उन्हें यह भ्रम भी हो जाता है कि वे अपने करतबों से मतदाता को आसानी से भरमा सकते हैं। तब वे या तो कुतर्क का सहारा लेते हैं या फिर आकर्षक नारों के जाल में जनता को फँसाने की कोशिश करते हैं। कभी वे जनता की भावनाओं के साथ खेलते हैं और कभी अपनी बाकपटुता से उसे भरमाते हैं। राष्ट्रवाद बड़ा नाजुक मुद्दा है। देश की सुरक्षा के नाम पर भावनाओं को आसानी से उभारा जा सकता है। राष्ट्र-प्रेम का हवाला देकर, राष्ट्र-हित का वास्ता देना और फिर किसी को राष्ट्र-विरोधी घोषित कर देना मुश्किल काम नहीं है। पर यह खतरनाक राजनीति है। खतरनाक इस माने में कि इस तरह के आरोप किसी एक वर्ग को जनता की निगाह में संदिग्ध सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। पर, दुर्भाग्य से, चुनाव के इस मौसम में इस तरह के आरोप आये दिन लगाये जा रहे हैं। यदि कोई देश के साथ छल करता है तो निश्चित रूप से वह सजा का भागी है, लेकिन सजा उसे भी मिले, जो आधारहीन आरोपों के सहारे अपनी राजनीति चमकाना चाहता है। झूटे वादे, झूटे दावे और झूटे आरोपों की सजा के लिए पता नहीं हमारी दंड-संहिता में कोई धारा या धाराएँ हैं अथवा नहीं, पर मतदाता इसकी सजा दे सकता है। अक्सर देता भी है। इसीलिए जरूरी हो जाता है कि मतदाता जागरूक हो, चौकन्ना हो, अपने विवेक का उपयोग करने वाला हो। आकर्षक नारों और चतुर तरकीबों के जाल में फँसने वाला मतदाता जनतंत्र में नागरिक के कर्तव्यों को पूरा नहीं करता। इन्हीं कर्तव्यों का तकाजा है कि मतदाता का व्यवहार ऐसा हो कि राजनीति के ठेकेदारों को अपनी गलती का अहसास लगातार होता रहे। दरअसल सबसे महत्वपूर्ण साधन तो हमारा बोट है। उचित और समर्थ के पक्ष में दिया गया बोट निश्चित रूप से सही-गलत का निर्णय करता है। पर इसके अलावा भी कोई तरीका ऐसा होना चाहिए जो हमारे राजनेताओं को मतदाता की ताकत का अहसास कराता रहे। वह तरीका राजनेताओं से उनके कहे किये के औचित्य का प्रमाण मांगना है। आज राजनीतिक दल और राजनेता बड़ी-बड़ी रैलियां कर रहे हैं; हरसंभव माध्यम से उसे भरमाने की कोशिश होती है। ऐसे में मतदाता की चुप्पी जनतंत्र की मूल भावनाओं को न समझने का संकेत होती है। मतदाता करोड़ों खर्च करने वाले राजनेताओं की नकल करके अपनी बात उन तक नहीं पहुंचा सकता, लेकिन वह इन नेताओं के कहे पर सवाल तो उठा ही सकता है।



अभिजीत कुमार
संपादक
9431006107

cbhindi.news@gmail.com

बिहार लोकसभा चुनाव में दिखेंगे कई सियासी रंग, जार्ज फर्नांडिश और लालकृष्ण आडवाणी की राह पर हैं शरद यादव



वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह
का सियासी समाचार विश्लेषण



प्रसाद यादव भी सांसद रह चुके हैं। राजद ने वाम दल को कोई सीट नहीं दिया है। राजद ने माले से कहा है कि वे लालटेन सिंम्बल पर एक सीट से चुनाव लड़ें। नवादा से सांसद रहे गिरिज सिंह को बीजेपी ने बेगूसराय से टिकट दिया है, जहां उनकी टक्कर भारत तेरे टुकड़े होंगे के नायक कहै या कुमार से है। बक्सर से अश्वनी चौबे, महाराजगंज से जनार्दन सिंह सिंगीवाल और छपरा से राजीव प्रताप रुद्धी बीजेपी के उम्मीदवार हैं। ये सभी गर्म सीटें हैं। इसके अलावे पटना साहिब से रविशंकर प्रसाद और पाटिलपुरा से रामकृपाल यादव बीजेपी के उम्मीदवार हैं। आरा से आर.के.सिंह बीजेपी से खड़े हैं। पटना साहिब से रविशंकर प्रसाद का मुकाबला शत्रुघ्नि सिंहा और पाटिलपुरा से रामकृपाल यादव का मुकाबला लालू प्रसाद यादव की पुरी मीसा भारती से है। इन सभी सीटों पर देश की नजर टिकी हुई है। वैसे जमुई से चिराग पासवान, हाजीपुर से पशुपति कुमार पारस, सुपौल से रंजीता रंजन, पुरीया से पपू सिंह, किशनगंज से तारिक अनवर और कटिहार से मुकेश सहनी पर भी सभी की नजरें टिकी हुई हैं। बांका सीट से जदयू ने पूर्व केंद्रीय मंत्री दिवंगत दिविजय सिंह की पती पुतुल कुमारी को टिकट नहीं दिया है। पुतुल कुमारी बांका से निर्दलीय चुनाव लड़ेंगी। इस सीट पर भी सभी की निगाहें टिकी हुई हैं। खगड़िया सीट से लोजपा के महबूब अली कैसर पर भी सभी की निगाहें टिकी हुई हैं। लोजपा से इन्हें टिकट मिलेगा की नहीं, इसपर कुछ संसय था। लेकिन अब सभी कुछ सफाह है। उन्हें पार्टी का सिंम्बल भी मिल चुका है। शिवहर सीट से पूर्व सांसद बाहुबली आनंद मोहन की पती लक्ष्मी आनंद का टिकट कांग्रेस से लगभग फिक्स था। लेकिन सियासी दंव-पेंच में लवली आआनंद को शिवहर से निर्दलीय चुनाव लड़ेंगी, एनडीए को नैतिक समर्थन करेंगी, या फिर कोई और रणनीति बनाएंगी, इसपर भी सभी की निगाहें टिकी हुई हैं।

पूर्व सांसद आनंद मोहन अभी सहरसा जेल में बन्द है। लेकिन आनंद मोहन का पूरे बिहार में जनाधार है। वे बहुतों का खेल बिगाड़ने का मादा रखते हैं। सभी सियासी जानकार अभी आनंद मोहन के अगले कदम का इंतजार कर रहे हैं। इस सीट पर देश की नजर टिकी हुई है। मध्येषुरा से लालू

कर रहे हैं। इधर सियासी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार बिहार में भी बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित साह का जादू चलेगा। सूत्रों की माने तो, तेजस्वी यादव बिहार में महागठबन्धन के सभी साथियों को नचा रहे हैं और जदयू की सहमति से बीजेपी तेजस्वी यादव को नचा रही है। ऐसीकी चुनाव सात चरणों में हो रहा है और चुनाव परिणाम 23 मई को देखने को मिलेंगे, इसलिए इस बीच में कई तरह की राजनीतिक कुश्ती से जनता का सीधा सामना होगा। जानकारी के मुताबिक विभिन्न दलों के उम्मीदवारों को टिकट देने में भी कठोड़े का बारा-न्यारा हुआ है। गौरतलब है कि टिकट बंटवारे का कोरम सभी दलों ने जब पूरा कर लिया है तो, इस विषय पर ज्यादा लिखना बेमानी है। अभीतक की जो तस्वीर समाने हैं, उसके मुताबिक बिहार में टक्कर महागठबन्धन और एनडीए के बीच जरूर है लेकिन पलड़ा एनडीए का भारी दिख रहा है। वैसे जैसे-जैसे चुनाव का समय निकट आता जाएगा, तस्वीर और भी साफ-साफ दिखेगी। मध्येषुरा सीट से तीन दिग्गज यादव उम्मीदवारों का मुकाबला काफी रोचक होगा। इस सीट से लोजद के संस्थापक शरद यादव खड़े हैं। लेकिन महागठबन्धन ने उनकी पार्टी को कोई तवज्ज्ञ नहीं दिया और शरद यादव के हाथ में राजद का सिंम्बल लालटेन थमा दिया गया है। संभावना जाती है कि लोकसभा चुनाव के बाद लोजद का राजद में विलय हो जाएगा। यह बेहद बड़ी और चौंकाने वाली बात है कि जिस शरद यादव को अभी देश का समाजवाद का सबसे बड़ा नेता माना जाता है, आज वे राजद की वैशाखी के सहारे चुनाव मैदान में खड़े हैं। राजनीतिक समीक्षकों का कहना है कि शरद यादव की राजनीति अब अवसान पर है। अगले कुछ साल में वे जदयू के जार्ज फर्नांडिश और बीजेपी के लाल कृष्ण आडवाणी की तरह निरीह प्राणी हो जाएंगे और राजनीति की मुख्यधारा से उन्हें विलुप्त कर दिया जाएगा। शरद यादव के राजनीतिक भवियत के अवसान की पटकथा लिखने की शुरुआत हो चुकी है। अब बात यह है कि आगे शरद यादव की राजनीति के अवसान का स्क्रिप्ट राईटर, तेजस्वी यादव को ठहराया जाएगा।

बिहार महागठबंधन में राजद और कांग्रेस के बीच तल्खी बढ़ी

वर्षाष पत्रकार मुकेश कुमार सिंह



दिल्ली : बिहार महागठबंधन में बड़े भाई की भूमिका निभा रहा राजद और कांग्रेस के बीच की तल्खी और रार काफी बढ़ गया है। सीट बंटवारे से पहले कांग्रेस 11 सीट से चुनाव लड़ने की जिद पर अड़ी थी। लेकिन राजद के तेजस्वी यादव ने कांग्रेस को 9 सीट देकर उसके मुंह को बन्द कर दिया। अब हाथ आयी इस 9 सीट में कांग्रेस शिवहर से बाहुबली पूर्व सांसद आनंद मोहन की पती लवली आनंद को चुनाव लड़ना चाहती थी। बताना लाजिमी है कि कुछ समय पहले ही लवली आनंद ने जीतनराम माझी की पार्टी "हम" से नाता तोड़कर कांग्रेस का दामन थामा था। बिहार कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष मदन मोहन ज्ञा और बिहार कांग्रेस चुनाव प्रभारी शक्ति सिंह गोहिल ने लवली आनंद को शिवहर सीट से टिकट देने का वादा और करार किया था। लेकिन तेजस्वी यादव की जिद और अकड़ की वजह से कांग्रेस लवली आनंद को शिवहर से टिकट देने में अक्षम साबित हुई। अब दो सीटें दरभंगा और सुपौल, कांग्रेस के गले की हड्डी बन रही है। दरभंगा के बीजेपी सिटिंग एम. पी. कीर्ति ज्ञा आजाद ने भाजपा से अपने निजी कारणों से नाता तोड़कर कांग्रेस का दामन थाम लिया था। कीर्ति आजाद ने कांग्रेस में शामिल होते हुए यह कहा था कि उनके पिता भागवत ज्ञा आजाद विशुद्ध कांग्रेसी थे और बिहार के मुख्यमंत्री भी रहे थे। सही मायने में, यह उनकी घर वापसी हुई है। दरभंगा में कीर्ति ज्ञा आजाद का बढ़िया जनाधार और



खासी लोकप्रियता भी है। लेकिन तेजस्वी यादव कीर्ति ज्ञा आजाद को दरभंगा की जगह बेतिया से चुनाव लड़वाना चाहते हैं। इसको लेकर कांग्रेस काफी बिदकी हुई है। इसके अधिक गर और तनाव अब सुपौल सीट को लेकर है, जहां रंजीता रंजन कांग्रेस की सिटिंग एम.पी. है। कांग्रेस ने रंजीता रंजन को सुपौल से टिकट कन्फर्म कर दिया है। लेकिन सुपौल राजद रंजीता रंजन को अपना उम्मीदवार मानने से साफ इंकार कर दिया है। सुपौल के सभी राजद के बड़े नेता एक सूर में कह रहे हैं कि राजद किसी भी रूप में रंजीता रंजन को अपना

उम्मीदवार नहीं स्वीकार करेगा। राजद विधायक यदुवंश यादव के नेतृत्व में राजद ने रंजीता भगाओ के नार के साथ, आंदोलन छेड़ दिया है। राजद के नेताओं का कहना है कि रंजीता रंजन और उनके पाति जाप सुपौलों पर्पू यादव ने मिलकर कोसी इलाके में राजद को भारी नुकसान पहुंचाया है। यानि सुपौल सीट अभी बिहार की सबसे ज्यादा गर्म सीट बनी हुई है। इधर राजद के द्वारा पर्पू यादव के लिए महागठबंधन के द्वारा ने एंट्री की तख्ती लगाने के बाद बैकफुट पर आए पर्पू यादव सुपौल के इस नए तमाशे से बैंहद आहत हैं। पर्पू यादव ने कहा है कि अगर सुपौल से उनकी पती रंजीता रंजन का कांग्रेस से टिकट कटा और इसी तरह रंजीता के खिलाफ राजद का यह तेवर रहा, तो वे उन तमाम सीटों पर जहां से राजद अपने उम्मीदवार उतार रहा है, वे भी अपनी पार्टी जाप से अपना उम्मीदवार खड़ा कर के राजद को सीधा करेंगे।

यानि पर्पू यादव का बगावती तेवर अब जमीन पर दिखाना शुरू हो गया है। हालांकि यह बगावती तेवर कोसी-सीमांचल या बिहार हित के लिए नहीं बल्कि उनकी पती प्रेम की वजह से है। पर्पू यादव के सूत्रों से यह खास जानकारी मिली है कि पर्पू यादव ने महागठबंधन का हिस्सा बनने के लिए लालू प्रसाद यादव से बात की थी। लेकिन लालू प्रसाद यादव ने पर्पू यादव से बिफरे और तल्ख लहजे में बात करते हुए कहा कि उनके बेटे तेजस्वी यादव को गाहुल गांधी, ममता बनर्जी, मायावती, अखिलेश यादव सहित देश के कई बड़े नेता अब नेता मान रहे हैं। लेकिन उम्मीदवारों में अनाप-शनाप बोल रहे हो तुम्हें



महागठबन्धन के कभी इंटी नहीं मिलेगी । अब तुम्हें अधिक फड़फड़ाने की वजह से औकात में लाकर सबक सिखाया जाएगा । लालू प्रसाद की इस तिरस्कृत बातचीत के बाद भी पप्पू यादव ने लालू प्रसाद का गुणगान नहीं छोड़ा । उन्हें उम्मीद थी कि लालू प्रसाद यादव पिछले जाएंगे और वे तेजस्वी को उनके लिए कोई खास निर्देश देंगे । लेकिन लालू प्रसाद यादव के साथ-साथ राजद खेमा पप्पू से निकटता बढ़ाने की जगह और उग्र ही होते चले गए हैं । जब कहीं से कोई रास्ता नहीं बचा, तब लाचार और बेबस होकर पप्पू यादव ने मध्येपुरा से अपनी पार्टी जाप से अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की है । इकहते हैं कि राजनीति में कोई किसी का दोस्त और दुश्मन नहीं होता है बल्कि सारे रिश्ते नफानुकसान देखकर तय होते हैं । राजनीतिक फायदे के लिए अक्सर गहरे दोस्त भी जानी दुश्मन बन जाते हैं तो, अलग-अलग धरा के दो खांटी दुश्मन भी गले मिलते हैं । राजनीति में कब कैसी तस्वीर उभर कर सामने आ जाये, इसपर किसी का जोर नहीं चलता है ।

इधर विगत 12 वर्षों से सहरसा जेल में बन्द आनंद मोहन के समर्थक शिवहर से लवली आनंद को कांग्रेस से टिकट नहीं मिलने से अग्रिया-बेताल हैं । हालांकि आनंद मोहन समर्थकों और खुद आनंद मोहन के भीतर खाने से जो जानकारी मिल रही है, उसके मुताबिक अब लवली आनंद के चुनाव मैदान में उत्तरने की जगह जेल से आनंद मोहन की ससम्मान रिहाई कैसे सम्भव हो सकेगा, सभी का ध्यान इस बात पर केंद्रित हो गया है । पूर्वी बिहार के लोगों ने क्रांतिवीर आनंद मोहन की सम्मानजनक रिहाई को अब "जन अभियान" बनाने का फैसला लिया है । आनंद मोहन को चाहने वाले इस सराहनीय पहल को पूरे बिहार में जन आंदोलन का रूप देने में समर्पित होकर जुट गए हैं । इस अभियान को व्यापक फलक देने की गरज से हर गाँव के चौराहे पर एक बड़ा बैनर और हर दरवाजे पर एक पोस्टर चर्चाओं करने की योजना बनाई गई है जिसमें

"जो आनंद मोहन की बात करेगा, वही बिहार पर राज करेगा" का स्लोगन रहेगा । आनंद मोहन के समर्थकों का कहना है कि अब सर से पानी ऊपर बहने लगा है और हद की इंतहा हो गयी है ।

विगत 12 वर्षों से एक निर्देश नायक लौह-सलाखों में



उस गुनाह की सजा भुगत रहा है, जो उन्होंने किया ही नहीं है । सदैव ही आनंद मोहन लड़ाई वर्ग, जाति, पथ, सम्प्रदाय और धर्म से ऊपर की रही है । वे हमेशा शोषण और अन्याय के खिलाफ चट्ठान की तरह अड़कर लड़ते रहे हैं । चूंकि आनंद मोहन बिहार के सहरसा जिले के पंचांगिया गाँव के रहने वाले हैं और अभी सहरसा जेल में बन्द हैं, इसीलिए इस अभियान की शुरूआत सहरसा की धरती से ही हो रही है । आगामी 31 मार्च को सहरसा के रेनबो रिसर्ट में आनंद मोहन समर्थकों का एक बड़ा सम्मेलन होने जा रहा है जिसमें

आनंद मोहन की ससम्मान रिहाई की आवाज को बुलंद करने के लिए "जन अभियान" की शुरूआत पर गहन विचार-विमर्श होगा ।

वैसे विश्वस्त सूत्रों से यह जानकारी भी मिल रही है कि पूर्व सांसद आनंद मोहन और पप्पू यादव के बीच लगातार गुप्त वार्ता हो रही है । अब इनदोनों के बीच कौन से सियासी खिचड़ी पक रही है, वह स्पष्ट नहीं हो पा रहा है ।

मोटे तौर पर बिहार के राजनीतिक हालात अभी ठीक नहीं हैं । लोकसभा या कोई भी चुनाव बेहद संवेदनशील मसला होता है । ऐसे समय में राजनेताओं के जातीय और धार्मिक उन्माद से सने बयानों पर चुनाव आयोग और

माननीय सुप्रीम कोर्ट को शख्त कारबाई करने की जरूरत है । हमें तो यह समझ में नहीं आ रहा है कि बाप-दादे के नाम पर कम पढ़े-लिखे लोग राजनीति में आकर इस लोकसभा चुनाव में संविधान बचाने का नारा दे रहे हैं । जिसने संविधान के चार पन्ने भी नहीं पढ़े हैं, वे संविधान की रक्षा के सिपाही बन रहे हैं । बड़ा सवाल है कि आखिर संविधान को हो क्या रहा है ? आमलोगों के बीच इस तरह की भ्रामक जानकारियां साझा करना, बहुत बड़ा अपराध है । माननीय सुप्रीम कोर्ट और चुनाव आयोग को इस मसले पर गम्भीर होना चाहिए । सामान्य वर्ग पर जुबानी हमले हो रहे हैं । एक विरोधी दल का बड़ा नेता कह रहा है कि सर्वण कभी उनकी पार्टी को वोट नहीं दिया है । लेकिन हद की इंतहा देखिए कि इसी पार्टी ने सर्वण उम्मीदवार भी खड़े किए हैं । सत्ताधारी दल के एक नेता कहते हैं कि सर्वण, गरीब तबके के पिछड़े रिवरायरों के बीच नहीं जाते हैं । उनके हाथों का पानी नहीं पीते हैं । ऐसे बयानवीरों पर समय रहते बड़ी कारबाई की जरूरत है । सामान्य वर्ग के लोग भी इसी देश के नागरिक हैं । वे विदेशी नहीं हैं । सर्वण जातियों के पूर्वजों ने इस देश के लिए बहुतों कुर्बानियां दी हैं और यह सिलसिला आज भी जारी है ।

खबर की समीक्षा की कड़ी में हम फिर एकबार कांग्रेस और राजद के बीच पनपे विवाद पर लौटते हैं । अभी राजद और कांग्रेस के बीच जो खटास आ रही है उसकी वजह राजद की अति महत्वाकांक्षा है । राजद आनंद मोहन, पप्पू यादव, अनंत सिंह, अरुण कुमार और राजनीतिक पारी की शुरूआत कर रहे कहने हैं । राजद की इस एकल नीति का खामियाजा कांग्रेस सहित महागठबन्धन के सभी दलों को भोगना होगा । वैसे बिहार में कांग्रेस दीन-हीन पार्टी की तरह राजद का किट संभाल रही है । अभीतक किसी कांग्रेसी नेता ने तेजस्वी के बारे में कोई तल्ख बयान नहीं दिया है । इससे यह साफ जाहिर होता है कि कांग्रेस वही करेगी, जो राजद के नेता तेजस्वी यादव चाहेंगे । राजनीतिक समीक्षकों के साथ-साथ जहां तक हमारी समझ जा रही है, उसके मुताबिक कोई बड़ा कारण है जिसकी वजह से बिहार में महागठबन्धन खुद से अपना नुकसान कराता दिख रहा है । निसन्देह, कांग्रेस और राजद की इस किंचिक्च का फायदा एनडीए को मिलकर रहेगा ।



बेगूसराय का चुनाव परिणाम में दिखेगा देश की जनता का मिजाज



अखिलेश कुमार

बिहार का बेगूसराय लोकसभा सीट के चुनाव परिणाम इस बार पूरी देश की नजर रहेगी। क्योंकि इस सीट से एक तरफ 'देशद्रोह' की भाषा बोलने वाले सीपीआई उम्मीदवार के रूप में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र नेता कन्हैया कुमार मैदान में हैं, तो दूसरी तरफ कट्टर हिंदूवादी छवि वाले केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार हैं। महागठबंधन के तरफ से राष्ट्रीय जनता दल ने तनावीर हसन को उम्मीदवार बनाया है। हालांकि मुख्य मुकाबला कन्हैया कुमार और गिरिराज सिंह के बीच होना तय माना जा रहा है। जबकि तनावीर हसन इसे तीसरा कोण बनाने में लगे हुए हैं। बेगूसराय लोकसभा सीट पर पहली बार भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार के रूप में स्वर्गीय भोला सिंह ने 2014 में जीत हासिल की थी। इससे पहले 2009 के चुनाव में जदयू से मोनाजिर हसन यहां से सांसद बने थे। बेगूसराय सीट पर अधिकांश समय तक कांग्रेस की ही कब्जा रही है। जबकि बगल की सीट बलिया पर वामपर्वथियों ने लंबे समय तक कब्जा जमाए रखा था। बेगूसराय लोकसभा के अंतर्गत बछवाड़ा, तेघा, बखरी, मठिहानी, साहेबपुर कमाल, चेरिया बरियापुर, बेगूसराय विधानसभा क्षेत्र आता है। बेगूसराय लोकसभा सीट भूमिहार बाहुल्य

माना जाता है। कन्हैया कुमार और गिरिराज सिंह दोनों इसी वर्ग से आते हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' का नारा देने के बाद चर्चा में आया जेएनयू के तत्कालीन छात्रसंघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार को राष्ट्रद्रोह ही कहा गया था। उन्हें जेल भी जाना पड़ा था और इसी के साथ देश का एक वर्ग उनके साथ खड़ा हो गया तथा उनकी राष्ट्रीय पहचान बन गई। देश में गिरोते जनाधार के बीच वामपंथ विचारधारा वाले लोगों ने कन्हैया कुमार को आगे कर इसका लाभ लेने का प्रयास किया है। और इसी के तहत उन्हें बेगूसराय लोकसभा सीट से सीपीआई ने अपना अधिकृत उम्मीदवार बनाया है। कन्हैया कुमार के पक्ष में जिग्नेश मेवाड़ी भी प्रचार करने आ रहे हैं गुजरात के बहीं जिग्नेश मेवाड़ी हैं जिन्होंने पिछले चुनाव में गुजरात से बिहारियों को खेदड़े की वकालत की थी। ऐसे में बेगूसराय के लोग मेवाड़ी से कितने प्रभावित होते हैं यह देखने वाली बात होगी। मेवाड़ी के साथ ही देश के जाने-माने कलाकार जावेद अख्तर, शबाना आजमी जैसे कई लोगों ने कन्हैया के पक्ष में चुनाव प्रचार करने का निर्णय लिया है। दूसरी तरफ गिरिराज सिंह ने पिछले लोकसभा चुनाव के दौरान 'भाजपा को बोट नहीं देने वालों को पाकिस्तान भेज दिया जाएगा' जैसा बयान देकर चर्चा में आने के बाद वे लगातार अपनी छवि कट्टर हिंदूवादी नेता के रूप में बनाने का प्रयास करते रहे हैं। गिरिराज सिंह नवादा लोकसभा सीट से पिछली बार चुनाव जीते थे। इस बार वह सीट गठबंधन में लोक जनशक्ति पार्टी को मिल गई है और भाजपा ने उन्हें कन्हैया कुमार के खिलाफ उतारने का निर्णय लिया है। हालांकि पहले वे बेगूसराय से चुनाव नहीं लड़ने का राग अलाप रहे थे लेकिन 'ना ना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे' वाली कहानी चरितार्थ हुई। हर हर महादेव और जय श्री राम का नारा लगाते हुए उन्होंने बेगूसराय में प्रवेश किया तथा वहां कापी लोकप्रिय रहे स्वर्गीय भोला सिंह की पती का पैर ढ्क्कर आशीर्वाद लेते हुए क्षेत्र के लोगों से भावानात्मक जुड़ाव करने का प्रयास किया। गिरिराज सिंह कहते हैं की बेगूसराय का चुनाव विकृत राष्ट्रवाद बनाम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बीच है और बेगूसराय की जनता सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का साथ देगी यह उन्हें पूर्ण भरोसा है। कन्हैया कुमार और गिरिराज सिंह के बीच बेगूसराय के चुनाव में महागठबंधन के प्रत्याशी तनावीर हसन चुनाव को तीसरा कौन बनाने में अपनी पूरी ताकत झोंक दिए हैं। अब देखना यह है की राष्ट्रीय जनता दल का खासकरा माई समीकरण तनावीर हसन का साथ देता है या फिर उस समीकरण का एक बड़ा भाग कन्हैया कुमार के तरफ झुक जाएगा? बेगूसराय का चुनाव परिणाम चाहे जिस के पक्ष में जाए लेकिन इतना तय है कि यह चुनाव परिणाम देश को एक नया संदेश जरूर देगा।



बिहार में उम्मीदवारी ने एनडीए को दिलाई शुरूआती बढ़त, महागठबंधन की किंचकिंच बनी बड़ी मुसीबत



वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह



एनडीए ने अपने सीट बंटवारे की सारी तस्वीरें साफ कर दी हैं। लेकिन महागठबन्धन में शिवहर और काराकट की सीट अभी भी गले की हड्डी बनी हुई है। वैसे 40 लोकसभा सीटों में से 38 सीटों पर महागठबन्धन के उम्मीदवारों को टिकट और सिंगल भी दिए जा चुके हैं। लेकिन महागठबन्धन में राजद सहित तमाम घटक दल के उम्मीदवार को लेकर तरह-तरह की सूचनाएं मिल रही हैं। कई लोकसभा सीट तो ऐसी हैं, जहाँ खड़े हुए उम्मीदवार को उस क्षेत्र की जनता ने कभी देखा भी नहीं है। यह एक अचंभे और अदूरदर्शी राजनीति का जिंदा इश्तेहार है।

लोग पहले दबी जुबान से बोलते थे लेकिन अब खुलकर संवाद कर रहे हैं कि बिहार में महागठबन्धन का स्वरूप बिल्कुल एनडीए की सहयोगी गठबंधन की तर्ज पर परिलक्षित हो रहा है। अंगेस महागठबन्धन में मूक और बधिर की तरह बस लोकसभा चुनाव मैदान में हम भी हैं कि उपस्थिति भर दर्ज करा रही है।

इधर राजद के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के पारिवारिक

कलह की गूंज अब सड़कों पर सुनाई देने लगी है। राजद के युवराज तेजस्वी यादव का विरोध अपने बड़े भाई तेजप्रताप यादव से अब जनता के सामने है। तेजप्रताप यादव ने छात्र राजद के राष्ट्रीय संरक्षक पद से इस्तीफा दे दिया है। तेजप्रताप का अभी अपनी पती ऐश्वर्या यादव से छलाफ का आंकड़ा है। तेजप्रताप यादव ने ऐश्वर्या के खिलाफ कोर्ट में तलाक की अर्जी दायर कर रखी है। तेजस्वी यादव ने इस विवाद के बाद भी, तेजप्रताप यादव के स्वसुर चंद्रिका यादव को सारण से राजद का टिकट दे दिया है। इस फैसले से आहत तेजप्रताप यादव ने अपने स्वसुर के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है। इसूत्रों से मिल रही जानकारी के मुताबिक मधेपुरा से उम्मीदवार जाप के संरक्षक पप्पू यादव, लालू प्रसाद यादव के घर उपजे विवाद में अपना राजनीतिक लाभ तलाश रहे हैं। पप्पू यादव ने तेजप्रताप के पास अपने दूत भेजकर सारण से उनकी पार्टी जाप से चुनाव लड़ने का निमंत्रण भेजा है। यानि पप्पू यादव महागठबन्धन में उनके लिए राजद के द्वारा लगाई गई नो एंटी की तरखी का जबाब देना चाहते हैं। लालू यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप के तेवर पूरी तरह से बगावती हो चूका है। तेजप्रताप यादव शिवहर से अंगेश कुमार और जहानाबाद से चंद्रप्रकाश यादव को चुनाव लड़ने को लेकर अड़ गए हैं। अपनी मांग ठुकरा

देने के बाद तेजप्रताप यादव ने चंद्रप्रकाश को निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में नामांकन दाखिल करने का निर्देश दे दिया है। आखिर ये दो प्रत्याशी कौन हैं जिन्हें तेजप्रताप चुनाव लड़ाना चाहते हैं? क्यों ये दोनों उम्मीदवार तेजस्वी यादव को मंजूर नहीं हैं। चंद्रप्रकाश प्रोफेसर चंद्रिका प्रसाद यादव के बेटे हैं। चंद्रिका प्रसाद यादव पुराने नेता है। वे कांग्रेस पार्टी के टिकेट पर 1977 में लोक सभा चुनाव लड़ चुके हैं। उनके चुनाव प्रचार में खुद इंदिरा गांधी जहानाबाद आई थीं। चंद्रप्रकाश की माता कमला देवी पूर्व जिला परिषद् के अध्यक्ष हैं। वे सामाजिक कार्यकर्ता हैं। कई स्कूल-कॉलेज की मालिकियत हैं। तेजप्रताप यादव के दूसरे प्रत्याशी अंगेश कुमार हैं। जिन्हें तेजप्रताप यादव शिवहर से चुनाव लड़ाना चाहते हैं। वे एक बड़े बिल्डर हैं। पहले अंगेश कुमार लालू यादव के साथ जुड़े थे। लेकिन जब लालू यादव ने उनकी बढ़ती राजनीतिक महत्वकालिका को भांपते हुए उन्हें अपने परसे से भगा दिया था। लेकिन उसके बाद उन्होंने तेजप्रताप यादव को पकड़ लिया। अब वो तेजप्रताप यादव के हर सुख-दःख में काम आते रहते हैं। ऐसे में भला तेजप्रताप उन्हें कैसे निराश कर सकते थे? म तेजप्रताप यादव का मानना है कि उनके उम्मीदवारों के नाम पर लालू यादव को नहीं बल्कि उनके भाई तेजस्वी



यादव को एतराज है। उन्होंने ही उनके नाम काट दिए। अपनी अनदेखी से तेजप्रताप यादव बेहद नाराज है। सूत्रों के अनुसार तेजप्रताप यादव अपनी अलग पार्टी बनाने का मन बना चुके हैं लेकिन अभी विधायकी खतरे में पड़ जाने के डर से सही समय का इंतजार कर रहे हैं।

लेकिन सबसे बड़ा सवाल जब पप्पू यादव की सांसदी लालू यादव ने अलग पार्टी बना लेने के बाबजूद नहीं छिन्नी, तो फिर अपने बेटे की विधायकी को बो खतरे में कैसे डाल सकते हैं? उधर एक बड़ी गलती तेजस्वी ने यह भी करी है कि उन्होंने पाटलिपुत्रा से अपनी बड़ी बहन मीसा भारती को राजद का उम्मीदवार बनाया है। अभी मीसा भारती राज्यसभा सांसद हैं, उनकी उम्मीदवारी बेहद हास्यास्पद है। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण, तो यह है कि मीसा भारती को स्टार प्रचारक की सूची से बाहर कर दिया गया है। पाटलिपुत्रा से राजद के कदाचर नेता भाई वीरेंद्र चुनाव लड़ना चाहते थे लेकिन उनकी ईच्छा की हत्या कर दी गयी। राजद के भीतर अभी कोहराम मचा हुआ है। कई यादव और मुसलमान नेता एक से दो दिन में राजद के विरोध में मोर्चा खोलने वाले हैं, जो राजद के साथ-साथ महागठबन्धन लिए नुकसान की बड़ी और मजबूत ईंवारत लिखेगा। राजद के अली अशरफ फातमी जो लालू प्रसाद यादव के बेहद करीबी हैं और काफी पैसे वाले हैं। फातमी ने राजद के विरोध में मोर्चा खोलते हुए कहा है कि वे लालू के बड़े राजदार हैं और चुनाव के दौरान लालू की पोल-पट्टी खोलेंगे। वे मधुबनी और दरभंगा सहित कई और सीट से निर्दलीय प्रत्यासी उतारने का शंखनाद कर रहे हैं। अली अशरफ फातमी ने लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव को 3 अप्रैल तक का अल्टीमेटम दिया है। उसके बाद वे राजद के बागी होकर अपना राजनीतिक कहर बरपाएंगे। बिहार का बेगूसराय भी बेहद पेंचीदा सीट हो गया है। बेगूसराय से बीजेपी के गिरिज सिंह उम्मीदवार है। राजद ने वहां से एक मुस्लिम उम्मीदवार खड़ा किया है। सबसे महत्वपूर्ण है कि बेगूसराय से कन्हैया कुमार वाम दल से उम्मीदवार हैं। कन्हैया कुमार ने जेएनयू से पढ़ाई की है। उनके प्रचार के लिए गुजरात के दलत विधायक जिनेश मेवाणी बेगूसराय में कैम्प किये हुए हैं। कन्हैया कुमार के लिए शबाना आजमी, जावेद

जानकारी हमतक पहुँच रही है, उसके मुताबिक तेजस्वी यादव राजद के सिम्बल पर लवली आनंद को चुनाव लड़ने का प्रस्ताव दे सकते हैं। इधर लवली आनंद निर्दलीय चुनाव लड़ने के लिए ताल-ठोंक रही हैं। लवली आनंद खुलकर कह रही हैं कि वे अपने समर्थकों के साथ फ्रंट फुट पर खेलेंगी। कांग्रेस को इतनी जलालत नहीं झेलनी चाहिए। कांग्रेस को सभी चालीसों सीट पर अपने दम से चुनाव लड़ना चाहिए। महागठबन्धन में कांग्रेस, मेमने की भूमिका है।

लवली आनंद प्रकरण को लेकर बिहार के सहरसा में जो लवली आनंद के पति पूर्व सांसद आनंद मोहन का गृह जिला भी है, वहां उनके समर्थकों के द्वारा 31 मार्च को एक बड़ी बैठक की आयोजित की गई। बैठक जिला परिषद के रेनबो रिसॉर्ट में दिन के 12 बजे शुरू हुई, जो लगातार देर शाम तक चलती रही। इस बैठक में लवली आनंद की उम्मीदवारी से ज्यादा इस विषय पर बहस हुई कि जो दल आनंद मोहन को जेल से रिहाई की बात करेगा, आनंद मोहन के समर्थक पूरे बिहार में उसी को अपना मत देंगे। "एक ही संकल्प और एक ही लड़ाई, शीघ्र हो आनंद मोहन की रिहाई"। इसी समर्थकों का कहना था कि जो दल आनंद मोहन की रिहाई की बात करेगा और पक्का वादा करेगा, आनंद मोहन समर्थक पूरे बिहार में उसी को समर्थन करेंगे। राजनीतिक दृष्टिकोण से से यह बैठक आगे बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी। लवली आआनंद ने इस बैठक में मौजूद रहीं। उनका कहना हुआ कि वह भी अपने पति की रिहाई चाहती हैं। उनके समर्थक जो तय करेंगे, वह मानने को तैयार हैं। आनंद मोहन समर्थकों ने आनंद मोहन की कुंद पड़ी बिहार पीपुल्स पार्टी को फिर से जिंदा करने की की भी बात कही। आज की यह बैठक ऐतिहासिक बैठक थी, जिसमें बिहार के लगभग सभी जिले से आनंद मोहन समर्थक जमा हुए थे। यह बैठक निश्चित तौर पर राजनीतिक गलियारे में एक नई धमक पैदा करेगी। जाहिर तौर पर इसबार के लोकसभा चुनाव में आनंद मोहन के समर्थक बेहद महत्वपूर्ण भूमिका में होंगे और मिल का पत्थर साबित होंगे।



लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप की बगावत, महागठबंधन को पड़ेगा मंहगा



बिहार के पूर्व स्वास्थ्यमंत्री और लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव की नाराजगी और उनकी बगावत ने महागठबंधन की नींद उड़ा दी है। तेजप्रताप यादव के ने राजद के भीतर ही लालू-राबड़ी मोर्चा बनाकर महागठबंधन के खेल को बिगाड़ने का पूरा मन बना लिया है। सूत्रों से मिल रही जानकारी के मुताबिक लालू-राबड़ी मोर्चे नाम की फिल्म की सूत्रधार और निर्देशक लालू प्रसाद यादव की बड़ी बेटी मीसा भारती हैं। इस फिल्म में तेजप्रताप यादव वितरक की भूमिका निभा रहे हैं। वैसे इस फिल्म के प्रोड्यूसर का अभीतक पता नहीं चल सका है। इस बगावती मोर्चा के बैनर तले तेजप्रताप यादव ने अपने चार उम्मीदवारों को चुनावी मैदान में उतारने का एलान भी कर दिया है। साथ ही वे खुद भी अपने स्वसुर चंद्रिका राय के खिलाफ सारण से निर्दलीय चुनाव लड़ने का एलान भी कर दिया है। उन्होंने अपने हालातू-राबड़ी मोर्चाहू के बैनर तले महागठबंधन के उम्मीदवारों के खिलाफ फिलहाल चार प्रत्याशी लड़ाने की अलग से

घोषणा भी कर दी है। ये उम्मीदवार हैं, बेतिया से राजन तिवारी, शिवहर से अगेश सिंह, जहानाबाद से चंद्रप्रकाश यादव और हाजीपुर से बालेन्द्र दास। तेजप्रताप ने सोमवार को प्रेस काफ़ेरेंस के दौरान इन चारों उम्मीदवारों को प्रेस के सामने पेश करते हुए, यह दावा किया कि ये राजद के निष्ठावान कार्यकर्ता हैं।

उन्होंने कहा कि उन्हें पिता लालू प्रसाद और माता राबड़ी देवी का आशीर्वाद प्राप्त है। वे राज्य की 20 लोकसभा सीटों पर अपने मोर्चा के बैनर तले राजद के निष्ठावान नेताओं और कार्यकर्ताओं को चुनाव लड़ने की कोशिश कर रहे हैं। अब 40 लोकसभा सीटों में से 20 लोकसभा सीटों पर अगर तेजप्रताप यादव अपने उम्मीदवार खड़े करेंगे, तो यह सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि इसकी भारी कीमत महागठबंधन को चुकानी होगी, जिसका सीधा फायदा एनडीए को मिलेगा।

इधर सूत्रों के हवाले से खबर है कि जिस तरीके से तेजप्रताप यादव ने खुली बगावत छेड़ रखी है और

बिहार की 20 लोकसभा सीटों पर अपनी ही पार्टी के उम्मीदवारों के खिलाफ निर्दलीय उम्मीदवार उतारने और उनके समर्थन का एलान किया है, उससे पार्टी के ज्यादातर नेता नाराज हैं। ये सभी नेता, पार्टी पर तेजप्रताप यादव के खिलाफ कार्रवाई का दबाव बना रहे हैं। खबर है कि राजद के लिए बागी बन चुके लालू प्रसाद के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव पर कार्रवाई हो सकती है। सोमवार की देर शाम लालू-राबड़ी मोर्चा बनाकर पांच उम्मीदवारों के नाम का ऐलान करने वाले तेजप्रताप से पार्टी का एक बड़ा तबका खासा नाराज है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद और नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के फैसले के खिलाफ जाने पर अब तेजप्रताप के खिलाफ कार्रवाई का दबाव बन रहा है। पार्टी के सभी बड़े नेता तेजप्रताप के इस रवैये से बेहद परेशान हैं। अगर तेजप्रताप यादव अपनी जिद पर अड़े रहे गए, तो निश्चित रूप से तेजप्रताप की यह बगावत एनडीए के लिए लोकसभा चुनाव में संजीवनी का काम करेगी।

घर से लेकर सड़क तक बगावती तेवर तेजस्वी के समक्ष पार्टी और परिवार दोनों बचाने की बड़ी चुनौती



पिछले तीन दशक से बिहार के राजनीति का केंद्रबिंदु बने लालू प्रसाद यादव के पार्टी और परिवार में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। चारा घोटाले में सजासा जेल में बंद लालू प्रसाद यादव ने अपने राजनीतिक विरासत को छोटे पुत्र तेजस्वी यादव को सौंप दिया है। लोकसभा चुनाव 2019 का बिगुल बज चुका है। इस दौरान लालू प्रसाद यादव के परिवार से लेकर पार्टी तक में विद्रोह के स्वर उभर रहे हैं। जिसे संभाल कर ले चलना तेजस्वी यादव के लिए अग्निपरीक्षा जैसा है। कम उम्र में बड़ी जिम्मेवारी मिलने के बाद तेजस्वी के विरोध में परिवार के अंदर ही समय समय पर विरोध के ज्वाला फटते रहते हैं।

आसन्न लोकसभा चुनाव में भी टिकट को लेकर पार्टी नेताओं और कार्यक्रमार्थी के साथ भाई बहन के विरोध के तेवर का सामना भी उन्हें करना पड़ रहा है। कई लोकसभा क्षेत्रों में टिकट नहीं मिलने से नाराज पार्टी के नेता बगावत पर उत्तर आए हैं तथा राज्य के कई भागों में उनका विरोध प्रदर्शन चल रहा है विभागीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने पर आमादा हैं तो वहीं दूसरी तरफ समय समय पर अपना उग्र रूप दिखाने वाले बड़े भाई तेज प्रताप यादव भी लोकसभा चुनाव के दौरान सीट के बंटवारे को लेकर अपना विरोध जता रहे हैं। बताया जाता है कि बड़ी बहन मीसा भारती को उम्मीद था कि पिताजी अपना

उत्तराधिकारी के रूप में बड़ी बहन होने के नाते मुझे जिम्मेवारियां सौंपेंगी। मीसा भारती शुरू से ही राजनीति में अपनी रुचि भी दिखाते रही है। परंतु लालू प्रसाद यादव ने अपने सबसे छोटे पुत्र तेजस्वी यादव को जब यह जिम्मेवारी सौंपी तो मीसा भारती के साथ ही साथ बड़े भाई तेज प्रताप यादव भी इस निर्णय को सहज ढंग से स्वीकार नहीं कर पाए। इन दोनों भाई बननों को यह बात हमेशा खटकती है की घर में बड़े लोगों को होने के बाद अखिर राजनीतिक जिम्मेवारी छोटे भाई को क्यों सौंपी गई? सभी राजनीतिक निर्णय तेजस्वी द्वारा लेने और अपने महत्वाकांक्षा को ठेस पहुंचने से खिन्न होकर ये लोग समय-समय पर परिवार में विरोध का स्वर उठाते रहते हैं।

पाटलिपुत्र लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से मीसा भारती को चुनाव लड़ाने को लेकर लंबी तकरार चली। तेज प्रताप यादव मीसा भारती के पक्ष में जब खड़े हुए तो अंत तक तेजस्वी यादव को मिसा भारती के नाम का ऐलान करना पड़ा। वहीं शिवहर, जहानाबाद तथा सारण लोकसभा सीट को लेकर तेज प्रताप यादव ने तेजस्वी यादव के विरोध में अपना उम्मीदवार देने की घोषणा कर दी। सारण सीट से तेज प्रताप यादव के संसुर व बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय दरोगा राय के पुत्र चंद्रिका यादव को राष्ट्रीय जनता दल के

तरफ से उम्मीदवार बनाया गया है। बड़ी मान मनोबल के बाद तेज प्रताप ने उस सीट से अपनी जिद तो छोड़ दी है लेकिन जहानाबाद तथा शिवहर सीट से अपने उम्मीदवार को चुनाव मैदान में उतारने और उनके पक्ष में प्रचार करने की घोषणा कर दी है। उन्होंने इन दोनों सीटों से अपने उम्मीदवार के नाम की घोषणा भी कर दी है। और कहा कि कि नामांकन के दिन वो स्वर्य साथ रहेंगे। ऐसी स्थिति तेजस्वी यादव के समक्ष बड़ा संकट खड़ा हो गया है। नाराज तेज प्रताप यादव ने छात्र राष्ट्रीय जनता दल के संरक्षक पद से इस्तीफा भी दे दिया है। यह इस्तीफा हालांकि अभी तक स्वीकार नहीं किया गया है लेकिन क्यास लगाए जा रहे हैं कि इस्तीफा देने का प्रमुख कारण उनके चहेतों को लोकसभा का उम्मीदवार नहीं बनाया जाना ही है।

घर में राजनीतिक महत्वाकांक्षा को लेकर उठ रहे बवंडर से पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के साथ ही साथ लालू प्रसाद यादव भी काफी तनाव में हैं। कम उम्र में मिली बड़ी राजनीतिक जिम्मेवारी को निभाने के साथ ही साथ परिवार और पार्टी दोनों को बचाना तेजस्वी के लिए बड़ी चुनौती है। पिंडा जेल में बंद हैं ऐसी स्थिति में यह काम उनके लिए और मुश्किल बनकर सामने खड़ा है। अब देखना यह है कि वे इस समस्या से कैसे निपटते हैं।

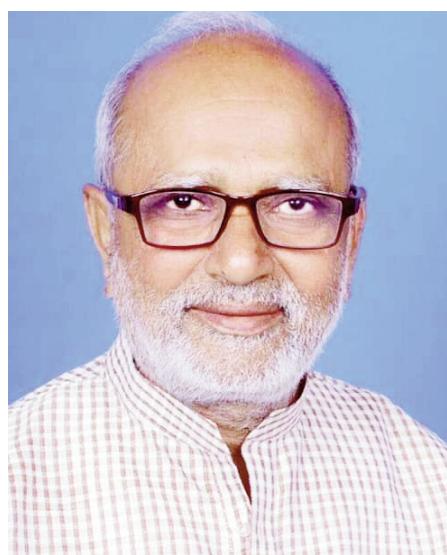
उपेंद्र कुशवाहा को एक और बड़ा झटका राम बिहारी में थामा जदयू का दामन

अंखिलेश कुमार

उपेंद्र कुशवाहा को एक और बड़ा झटका राम बिहारी में थामा जदयू का दामन पूर्व केंद्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा को अपने पार्टी के नेताओं द्वारा साथ छोड़ने का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है अब उनके दल के प्रधान महासचिव राम बिहारी सिंह ने भी साथ छोड़ दी है और जनता दल यू का दामन थाम लिया है राम बिहारी सिंह उपेंद्र कुशवाहा के सबसे करीबी लोगों में रहे हैं इसीलिए उन्हें पार्टी में प्रधान महासचिव की जिम्मेवारी सौंपी गई थी लेकिन उपेंद्र कुशवाहा ने जबसे एनडीए का साथ छोड़ा है तब से उनके दल के नेता लगातार किनारे होते जा रहे हैं और श्री भगवान सिंह कुशवाहा नामगणि जैसे रालोसपा से निकले सभी प्रमुख नेताओं को आश्रय नीतीश कुमार दे रहे हैं। पिछले 27 मार्च को पटना स्थित जदयू के कार्यालय में राम बिहारी सिंह ने रालोसपा से त्यागपत्र देने के बाद जनता दल की सदस्यता ग्रहण की और कहा किया मेरा घर पुनर वापसी है मैं उपेंद्र कुशवाहा के पास घुटन महसूस कर रहा था क्योंकि जिस नीति और सिद्धांत को लेकर पार्टी की स्थापना की गई थी और बिहार में समरस समाज बनाने का सपना देखा गया था उस नीति और सिद्धांतों को आघाट पहुंचाते हुए उपेंद्र कुशवाहा संक इन भावनाओं से ग्रसित होकर निम्न स्तर की राजनीति पर उतार हो चुके हैं तथा समाज के बदले अगला पिछड़ा और जातीय राजनीति उनकी प्राथमिकता बन गई है ऐसी स्थिति में उस दल में मेरे जैसे लोगों का टिक पाना संभव नहीं था राम बिहारी सिंह ने कहा कि बिहार में नीतीश कुमार के कार्यकाल में विकास की गति काफी तेज हुई है और वे समाज के



पिछले 27 मार्च को पटना स्थित जदयू के कार्यालय में राम बिहारी सिंह ने रालोसपा से त्यागपत्र देने के बाद जनता दल की सदस्यता ग्रहण की और कहा किया मेरा घर पुनर वापसी है मैं उपेंद्र कुशवाहा के पास घुटन महसूस कर रहा था क्योंकि जिस नीति और सिद्धांत को लेकर पार्टी की स्थापना की गई थी और बिहार में समरस समाज बनाने का सपना देखा गया था उस नीति और सिद्धांतों को आघाट पहुंचाते हुए उपेंद्र कुशवाहा संक इन भावनाओं से ग्रसित होकर निम्न स्तर की राजनीति पर उतार हो चुके हैं तथा राजनीति को दर्किनार कर मोदी और नीतीश के कर्तव्य निष्ठा तथा जनता की सेवा और इमानदारी पर अपनी मुहर लगाएगी।



सभी वर्गों को साथ लेकर चलने का प्रयास कर रहे हैं ऐसी स्थिति में नीतीश कुमार के साथ काम करने में मैं गर्व महसूस करूंगा पहले भी मैं नीतीश कुमार के साथ था और पुनर नाम चलने का निर्णय लिया हूं उन्होंने कहा कि आगामी लोकसभा चुनाव जमीन से जुड़े दो गरीब नेताओं बनाम सोना के चम्पाच लेकर पैदा हुए दो राजकुमारों के नीतियों के बीच होगा एक तरफ चाय बेचने वाला गरीब का बेटा नरेंद्र मोदी तथा अति साधारण

परिवार में जन्मे नीतीश कुमार होंगे तो दूसरी तरफ नेहरू खानदान के राजकुमार राहुल गांधी और चारा घोटाले में बंद सजाता लालू प्रसाद यादव का बेटा तेजस्वी यादव खड़े होंगे ऐसे में बिहार की जनता सही निर्णय लेगी और भ्रष्टचार तथा घोटालों में लिप्त सोनिया और लालू परिवार के नेतृत्व को दर्किनार कर मोदी और नीतीश के कर्तव्य निष्ठा तथा जनता की सेवा और इमानदारी पर अपनी मुहर लगाएगी।

बिहार के सत्ता संग्राम में रूपयों से खरीदे गए टिकट राजद की वजह से महागठबन्धन बना बीजेपी की 'बी' पार्टी

वरिष्ठ पत्रकार मुकेश कुमार सिंह
की खास राजनीतिक समीक्षा

एनडीए ने बिहार के 40 सीटों पर अपने उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। एनडीए में बीजेपी के साथ जदयू और लोजपा शामिल हैं। 11-17 सीटों पर बीजेपी और जदयू चुनाव लड़ रही है जबकि 6 सीटों लोजपा के खते में आई हैं। एनडीए ने काफी सोच-समझकर अपने-अपने प्रत्यासी उतारे हैं। लेकिन कुछ सूत्रों पर नासमझी भी की है। भागलपुर से बीजेपी के द्वारा शाहनवाज हुसैन को टिकट नहीं दिया जाना मुस्लिम भाजपाईयों के साथ-साथ अन्य भाजपाईयों को बेहद अखड़ा और खटक रहा है। सूत्रों से मिल रही जानकारी के मुताबिक सभी दलों ने टिकट की बिक्री ऊंची कीमत पर की है।

जहाँतक महागठबन्धन का सवाल है तो, तेजस्वी यादव किंग मेकर की भूमिका में है। राजद ने अपने खाते में 20 सीटें ली हैं और कांग्रेस को सिर्फ 9 सीट देकर निपटा लिया है। आजादी से पूर्व की पार्टी और देश में सबसे अधिक दिनों तक शासन में रही कांग्रेस की बिहार में चुनाव से पहले ही भद पिट गयी है। कांग्रेस आलाकमान की जगह राजद आलाकमान के तेवर ने अपना असली रंग दिखाया है। राजद ने महागठबन्धन के अन्य साथी रातोंसपा को 5, हम को 3, भीआईपी को 3 सीटें दी हैं। वाम मोर्चा को 1 भी सीट नहीं दी है। इतनाशाही और मोनोपोली की हाद देखिए कि लोजद के जन्मदाता शरद यादव को भी सीट नहीं दी गयी है। वे राजद के सिम्बल लालटेन से चुनाव लड़ेंगे। माले को एक सीट पर राजद ने लड़ने को कहा है, वह भी लालटेन के सिम्बल पर। शरद यादव देश के सबसे पुराने सांसद हैं और उनकी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान है। लेकिन उनकी पार्टी को चुनाव बाद राजद में विलय करने का फरमान जारी किया गया है। लोजद का अपना चुनाव चिन्ह तुरहा बजाता आदमी है। अब माले भी धर्मसंकट में हैं की वह करे तो क्या करे? तेजस्वी यादव ने भारत तेरे टुकड़े होंगे के नायक कहने वाला कुमार को महागठबन्धन से बिल्कुल टूर रखा है। कांग्रेस 11 सीट पर अड़ी थी लेकिन तेजस्वी यादव ने कांग्रेस को उसकी औकात में लाकर ठंडा कर दिया है। राजनीतिक और बेहद भीतरी सूत्रों से मिल रही जानकारी के मुताबिक तेजस्वी यादव के बीच बड़ी डील हुई है। इस डील में करोड़ों के खेल के साथ-साथ लालू की जेल से रिहाई का रास्ता साफ करने का बीजेपी ने वचन दिया है। सूत्र बताते हैं कि तेजस्वी यादव ने बिहार में महागठबन्धन को बीजेपी की "बी" टीम बना डाली है। जानकारी के मुताबिक बीजेपी के



इशारे पर ही शिवहर से लवली आनंद को टिकट देने में कांग्रेस असमर्थ साबित हो गयी। लवली आनंद शिवहर सीट से चुनाव लड़ने की शर्त पर ही कांग्रेस में शामिल हुई थी। लेकिन अब लवली आनंद खुद को ठगा महसूस रही है। पूर्व सांसद आनंद मोहन की पती लवली आनंद को शिवहर से टिकट नहीं मिलने पर उनके समर्थक अगिया-बेताल हैं। पूर्व सांसद आनंद मोहन का सामाजिक संगठन फ्रेंड्स ऑफ आनंद ने आज पुर्णिया में आहूत राहुल गांधी की रैली में भी शिवहर सीट लवली को नहीं दिए। जाने के खिलाफ में जमकर प्रदर्शन और नारेबाजी किया। लेकिन बिहार में राहुल बाबा आलाकमान नहीं हैं। बिहार में महागठबन्धन के तेजस्वी यादव आलाकमान हैं। अब लवली आनंद शिवहर से निर्दलीय चुनाव लड़ने का मन बना रही है। सूत्रों की मानें, तो बीजेपी के इशारे पर तेजस्वी ने आनंद मोहन, अनंत सिंह, पप्पू यादव और अरुण कुमार को हासिये पर लाने का चक्रव्यूह रचा है। देश जानता है कि पूर्व सांसद आनंद मोहन का बिहार सहित देश भर में अच्छा जनाधार है। पप्पू यादव, अनंत सिंह और अरुण कुमार का भी अपना राजनीतिक बजूद और मजबूत जनाधार है। बीजेपी तेजस्वी के काँधे पर राजनीतिक बंदूक रखकर चला रही है। बीजेपी इन नेताओं के बिहार में वर्चस्व को खत्म करना चाहती है, जिसका लाभ उसे इस लोकसभा चुनाव के साथ-साथ आगामी बिहार विधान सभा चुनाव में भी मिल सके। एक समय कांग्रेस लगभग महागठबन्धन से निकलने का मन बना चुकी थी लेकिन अचानक तेजस्वी के किस मंत्र से वह 9 सीट पर मान गयी, इसपर रहस्य बरकरार है। राजनीतिक समीक्षकों का कहना है कि पूर्व सांसद आनंद मोहन को शिवहर से अब अपनी पती लवली

आनंद को निर्दलीय चुनाव नहीं लड़ाना चाहिए। उन्हें एनडीए को नैतिक समर्थन कर देना चाहिए। इससे एक अलग राजनीतिक संवाद बिहार सहित देश के भीतर जाएगा। पूर्व सांसद आनंद मोहन लोहिया, जेपी और कपूरी ठाकुर के समाजवादी धरा के उपासक हैं। लेकिन उन्हें यह जानकारी का अभाव है कि अभी देश की कोई पार्टी समाजवादी सोच का अनुसरण नहीं कर रही है। इसी मौके की नजाकत की राजनीति कर रही है। पहले आनंद मोहन को खुद के जेल से निकलने की व्यवस्था करनी चाहिए, फिर अपने विचारों को जिंदा रखने और उसके संवर्धन की कोशिश करनी चाहिए। इधर बिहार की उन सीटों की चर्चा भी बेहद जरूरी है जिसपर देश की निगाह टिकी होंगी। बिहार का सबसे हॉट सीट मध्यपुरा है, जहां से शरद यादव महागठबन्धन से, दिनेश चंद्र यादव जदयू से और पप्पू यादव जाप से चुनावी समर में एक-दूसरे के सामने होंगे। पटना साहिब से बीजेपी से कंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद और महागठबन्धन से शत्रुघ्नि सिन्हा की टक्कर है। बेगूसराय से गिरिजा सिंह भाजपा के उम्मीदवार हैं। बक्सर से अश्वनी चौबे और आरा से आए.के.सिंह बीजेपी के उम्मीदवार हैं। कयास लगाया जा रहा है कि बेगूसराय से कहनेवाला कुपार भी खड़े होंगे। जप्पुर्इ सुरक्षित सीट से लोजपा से चिराग पासवान उम्मीदवार हैं। ये वही चिराग हैं, जो यह कह रहे थे कि जो दलित परिवार आरक्षण से सम्पन्न हो चुके हैं, उन्हें आरक्षण का लाभ नहीं लेना चाहिए। लेकिन कथनी और करनी में बहुत फर्क होता है। जनाब आरक्षित सीट से ही उम्मीदवार हैं। हाजीपुर से लोजपा के प्रदेश अध्यक्ष पशुपति कुमार पारस उम्मीदवार हैं। पाटिलपुत्रा से बीजेपी से रामकृपाल यादव और राजद से लालू प्रसाद यादव की पुत्री मीसा भारती उम्मीदवार हैं। सुपूर्ण से कांग्रेस की मौजूदा सांसद रंजीता रंजन, फिर से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ रही हैं। सबसे कमाल का काम तो, तेजस्वी यादव ने यह किया है कि नाबालिंग से बलाक्का भारती में जेल मरण बन्द राजद विधायक राजबल्लभ यादव की पती विधा देवी को नवादा से राजद का उम्मीदवार बनाया है। नीतीश कुमार ने बांका से दिविंगत नेता दिविंगत सिंह की पती पुतुल देवी को टिकट नहीं दिया है। पुतुल देवी निर्दलीय चुनाव मैदान में उतरने की तैयारी कर रही हैं। कमोबेश बिहार का हार सीट अब महत्वपूर्ण दिख रहा है। मुगेर से जदयू के ललन सिंह उम्मीदवार हैं। सीट बंटवारे के बाद जो तस्वीर साफ हुई है, उसके मुताबिक बिहार में एनडीए का पलड़ा भारी है। वैसे राजनीति में कुछ भी हो सकता है। अभी चुनावी दौरे और लंबे-लंबे भाषणों का असर और प्रकोप भी देखना बाकि है।

जानिए क्यों खास है बिहार का महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र

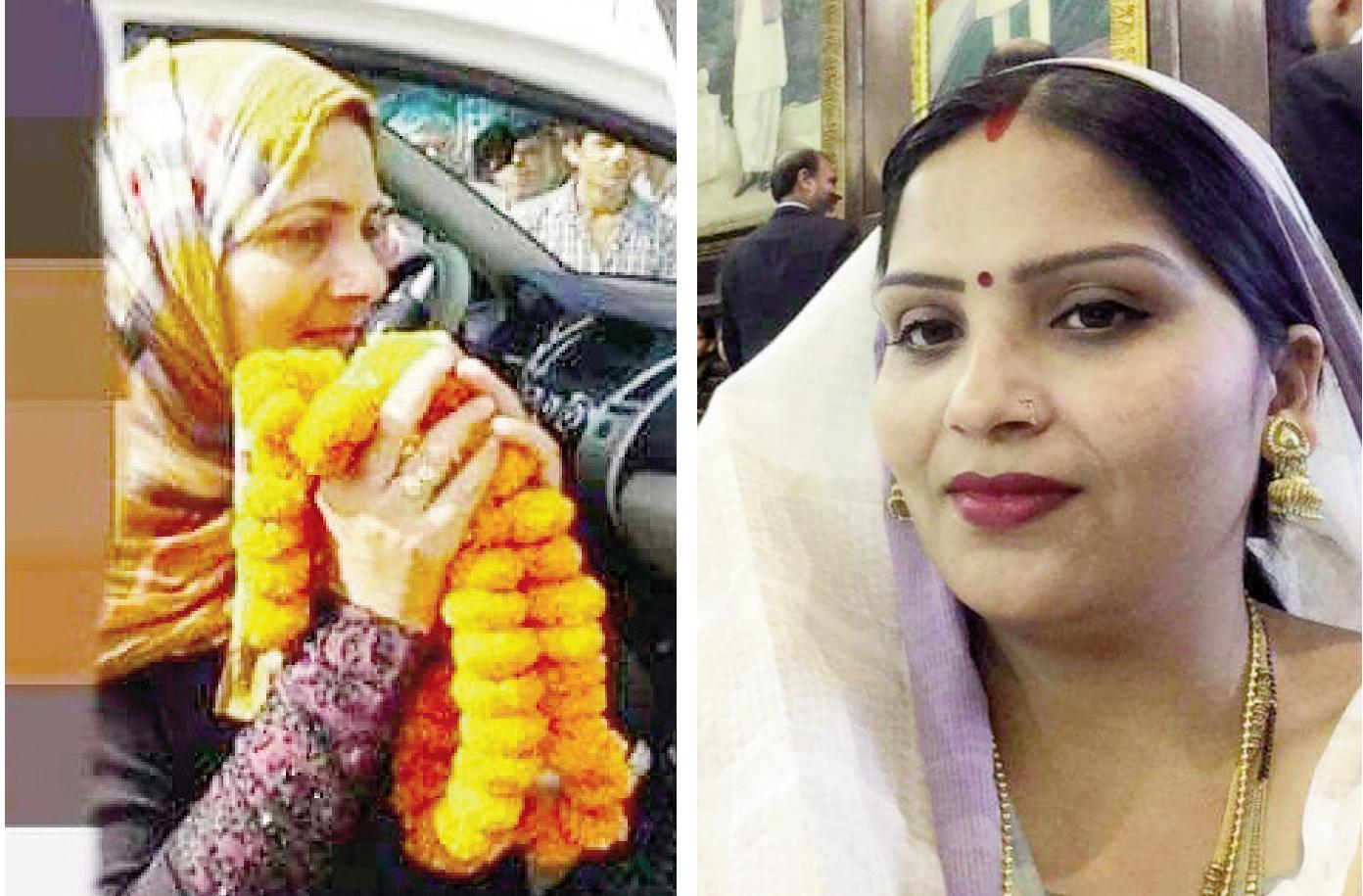
अनूपनारायणसिंह

बिहार के चितौड़गढ़ के रूप में चर्चित महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र से भाजपा के निवर्तमान सांसद जनार्दन सिंह सिंग्रीवाल और राजद के टिकट पर पहली बार चुनाव में उतरे छपरा के पूर्व विधायक तथा पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह के पुत्र रणधीर कुमार सिंह के बीच सीधा मुकाबला है। मौजूदा सांसद जनार्दन सिंह सिंग्रीवाल जहां मोदी मैजिक के भरोसे हैं वही राजद उम्मीदवार रणधीर सिंह सहानुभूति लहर माई समीकरण तथा सजातीय बोटरों पर पिता के प्रभाव के दम पर ताल ठोक रहे हैं बिहार का महाराजगंज लोकसभा क्षेत्र सारण और सीवान जिलों के कई हिस्सों को मिलाकर बना है। यह उत्तर प्रदेश की सीमा से सटा इलाका है। यह एक तरफ गोपालगंज जिले से भी घिरा हुआ है। लंबे समय तक यह सीट कांग्रेस और फिर जनता दल का मजबूत गढ़ बना रहा। फिर आरजेडी ने भी यहां से दो बार अपने उम्मीदवार जिताए। राजपूत बहुल इस सीट पर मुस्लिम-यादव समीकरण खेल बना और बिगड़ सकता है। 2014 के चुनाव में यहां से जनार्दन सिंह सिंग्रीवाल बीजेपी के टिकट पर जीतकर सांसद बने। इस सीट पर राजपूत समुदाय से आने वाले क्षत्रिय क्षत्रप्रभुनाथ सिंह की अच्छी पकड़ मानी जाती है। वे यहां से 4 बार सांसद रहे हैं। पहले जनता दल, फिर समता पार्टी और बाद में आरजेडी के टिकट पर यहां से सांसद चुने गए। लेकिन 2014 के मोदी लहर में बीजेपी उम्मीदवार के सामने उन्हें मात खानी पड़ी। इस लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं की कुल संख्या 1,312,219 है। सारण प्रमंडल की महाराजगंज सीट पर सियासत दिलचस्प रही है। 1996 से ही यह सीट जेडीयू के खाते में रही है। तभी से 2009 तक चार बार जेडीयू यह सीट जीती है। केवल एक बार 2009 में उसे पराजय का सामना करना पड़ा था। 1989 में चंद्रशेखर ने महाराजगंज व बलिया से चुनाव लड़ा था वे दोनों जगह से जीते थे मगर उन्होंने महाराजगंज सीट छोड़कर बलिया अपने पास रखा था। इसी कार्यकाल में वे प्रधानमंत्री बने। 2014 के आम चुनाव में जब भाजपा और जेडीयू ने अलग-अलग चुनाव लड़ा तब मोदी लहर में इस सीट से भाजपा के जनार्दन सिंह सिंग्रीवाल विजेता रहे। यह सीट राजपूत बहुल है। जेडीयू-बीजेपी दोनों की इस सीट पर नजर है। पिछले विधानसभा चुनाव में वर्तमान सांसद सिंग्रीवाल के संसदीय क्षेत्र के सभी सीटों पर एनडीए को हार का मुह देखना पड़ा था। पुराने आंकड़ों पर नजर डालें तो 1957 के चुनाव में महाराजगंज सीट से कांग्रेस के महेंद्र नाथ सिंह चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंचे थे। 1962 में कांग्रेस के कृष्णकांत सिंह जीते। 1967 में एमपी सिंह और 1971-1971 में रामदेव सिंह इस सीट से चुनाव



सीटों में से 4 एकमा, मांझी, बनियापुर और तरैया सारण जिले में आते हैं और बाकी के दो गोरियाकोठी और महाराजगंज सिवान जिले में। महाराजगंज क्षेत्र में राजपूत समुदाय की अच्छी खासी आबादी है और यादव समुदाय की भी। 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में इन 6 सीटों में से 3 आरजेडी ने, 2 सीट जेडीयू ने और 1 सीट कांग्रेस ने जीती। सिवान में पड़ने वाली गोरियाकोठी सीट आरजेडी ने तो महाराजगंज सीट जेडीयू ने जीती। जबकि सारण जिले में पड़ने वाली एकमा सीट से जेडीयू मांझी से कांग्रेस, बनियापुर और तरैया से आरजेडी उम्मीदवारों की जीत हुई थी। प्रभुनाथ सिंह के जेडीयू छोड़ आरजेडी में जाने के कारण बीजेपी-जेडीयू को इस इलाके में काफी नुकसान उठाना पड़ा। 16वीं लोकसभा के लिए 2014 में हुए चुनाव में महाराजगंज सीट से बीजेपी के जनार्दन सिंह सिंग्रीवाल जीते। उन्होंने दबंग छवि के नेता प्रभुनाथ सिंह को मात दी। सिंग्रीवाल को 3,20,753 वोट मिले थे। जबकि प्रभुनाथ सिंह को 2,82,338 वोट तीसरे नंबर पर रहे एक और बाहुबली नेता जेडीयू के मनोरंजन सिंह उर्फ धूमल सिंह जिन्हें 1,49,483 वोट मिले।

विकास, राष्ट्रवाद एवं मोदी लहर तथा महागठबंधन के बीच सियासी संघर्ष से दिलचस्प हुई सिवान की लड़ाई



सचिन कुमार पर्वत

देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद की जन्मभूमि सिवान की धरती देश रत की जन्मभूमि से ज्यादा राजद के पूर्व सांसद शहाबुद्दीन के कारण चर्चा के केंद्र में रहा है। बात जब लोकसभा चुनाव की आती है तो बिहार ही नहीं बल्कि देश की नजरें सिवान सीट पर टिकी रहती हैं। क्योंकि यहां से सिवान के बाहुबली माने जाने वाले शहाबुद्दीन का एकक्षत्र या यूँ कहें समानान्तर सरकार चलती थी। सिवनवासियों का मानना है कि इस बीच उन्होंने कई विकास कार्य किये जिसकी प्रशंसा आज भी लोग करते सुने जाते हैं। हालांकि उस दौरान सिवान में दर्जनों सियासी हत्याएं हुईं जिसके लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शहाबुद्दीन का नाम आया। इसी बीच चर्चित तेजाब कांड ने सिवान ही नहीं पूरे देश को हिलाकर रख दिया। सरकार पर बढ़ते जनदबाव के कारण शहाबुद्दीन को जेल जाना पड़ा। उसके बाद करीब तरह वर्षों तक वे जेल में रहे, इसी बीच कई मामलों में उन्हें सजा भी हुईं। फिलहाल

शहाबुद्दीन दिल्ली के तिहाड़ जेल में उम्रकैद की सजा कट रहे हैं। शहाबुद्दीन के जेल जाने के बाद उनका राजनीतिक ग्राफ लगातार गिरने लगा। इसी बीच ओमप्रकाश यादव नाम के एक युवा नेता को शहाबुद्दीन ने चाटा जड़ दिया, जो उनके लिए आत्मवाती साबित हुआ। अप्रमान से बिलबिलाया वह युवा कोई और नहीं बल्कि वर्तमान सांसद ओमप्रकाश यादव ही है। ओम प्रकाश यादव ने सर पर कफन बांधकर शहाबुद्दीन के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। शहाबुद्दीन सजायापता होने के कारण 2009 में स्वयं चुनाव नहीं लड़े लेकिन अपनी पती हेना शहाब को मैदान में उतारा जिन्हें निर्दलीय प्रत्याशी ओमप्रकाश यादव ने शिकस्त दे दिया। इसके बाद 2014 के चुनाव में ओम प्रकाश यादव भाजपा का टिकट लेने में कामयाब रहे और मोदी लहर में फिर से हेना शहाब को पराजित कर दिया। विशेषकों का मानना है कि पूरे बिहार में व्याप जंगल राज से सिवान भी अल्पता नहीं रहा। फलस्वरूप संगठित अपराध शहाबुद्दीन के विकास पर भारी पड़

गया। 2019 के चुनाव में तस्वीर बदली सी नजर आ रही है, इसबार का चुनाव के मायने बदल गए हैं, जिसका मुख्य कारण है दो महिलाओं का चुनाव मैदान में होना। बिहार में गए एनडीए गठबंधन में सीटों के बंटवारे के बाद सिवान सीट जदयू के पाले में चले जाने से ओम प्रकाश यादव चुनाव मैदान से बाहर हो गये हैं। एनडीए ने जहा उदार हिन्दूवादी जदयू के कद्दावर नेता अजय सिंह की पती तथा दरौद विधानसभा क्षेत्र से लगातार दूसरी बार विधायक चुनी गई जदयू नेता कविता सिंह को प्रत्याशी बनाया है। वहीं माले ने वहीं सीपीआई माले ने कदावर नेता अमरनाथ यादव को ही फिर से मैदान में उतारा है। सिवान की राजनीतिक पृष्ठभूमि की बात करें तो सीवान पूर्व में सांसद जनार्दन तिवारी के नेतृत्व में जनसंघ का गढ़ हुआ करता था। लेकिन 1980 के दशक के आखिर में मोहम्मद शहाबुद्दीन के उदय के बाद जिले की सियासी तस्वीर बदल गई। बाहुबली नेता मोहम्मद शहाबुद्दीन 1996 से लगातार चार बार सांसद

बने राजनीति में एमए और पीएचडी करने वाले शहाबुद्दीन ने बाहुबल के जरिए सीवान में अपना दबदबा कायम किया। तब माना गया कि सीवान में नक्सलवाद के बढ़ते प्रभाव के डर से हर वर्ग और जाति के लोगों ने शहाबुद्दीन को समर्थन किया।

लेकिन सीवान के चर्चित तेजाब कांड के मामले में शहाबुद्दीन को उम्र कैद की सजा होने के बाद यहां की सियासी तस्वीर में बड़ा बदलाव देखने को मिला। शहाबुद्दीन के जेल जाने के बाद यहां ओमप्रकाश यादव का उभार हुआ। 2009 में पहली बार निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में ओमप्रकाश यादव चुनाव जीत गए और शहाबुद्दीन के प्रभाव की चुनौती देते हुए नजर आए। 2014 में ओमप्रकाश यादव बीजेपी के टिकट पर मोदी लहर में दुबारा जीत गये।

सीवान संसदीय सीट के इतिहास पर अगर गौर करें तो 1957 के चुनाव में सीवान सीट से कांग्रेस के झूलन सिंह विजयी रहे। इसके बाद 1962, 1967, 1971 और 1980 के चुनाव में कांग्रेस के मोहम्मद युसूफ यहां से चुनकर संसद गए। 1984 में कांग्रेस के मोहम्मद गफूर चुनाव जीतकर दिल्ली गए। 1989 के चुनाव में बीजेपी ने सीवान से अपना खाता खोला और जनर्दन तिवारी लोकसभा पहुंचे। 1991 में जनता दल के बृष्ण पटेल यहां से संसद बने।

1996 के चुनाव में सीवान संसदीय सीट के इतिहास में शहाबुद्दीन की एंट्री हुई। जनता दल के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरे बाहुबली शहाबुद्दीन ने बीजेपी के जनर्दन तिवारी को करारी शिकस्त दी। इसके बाद जब लालू यादव ने जनता दल से अलग होकर आरजेडी बनाई तो शहाबुद्दीन ने 1996, 1999 और 2004 का चुनाव आरजेडी के टिकट पर जीता। इसके बाद शहाबुद्दीन को तेजाब कांड में सजा हो गई और चुनाव लड़ने पर रोक लग गई। यहीं से सीवान सीट पर ओमप्रकाश यादव की किस्मत खुली। अगले दो चुनाव यानी 2009 में निर्दलीय और 2014 में बीजेपी के टिकट पर ओमप्रकाश यादव ने शहाबुद्दीन की पती हीना शहाब को हराकर चुनाव जीता।

इस सीट के समीकरण की बात करें तो 2014 लोकसभा चुनाव में कुछ इस प्रकार से था- कुल मतदाता- 15,63,860, इनमें से 8,84,021 वोटर्स वोट देने के लिए मतदान केंद्र तक पहुंचे थे।

विधानसभा सीटों का समीकरण-

सीवान संसदीय क्षेत्र के तहत 6 विधानसभा सीटों आती हैं- सीवान, जीरादई, दौलती, रघुनाथपुर, दरौदा और बरहड़िया। 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में बातौर महागठबंधन इन 6 में तीन सीटों पर जेडीयू के उम्मीदवार जीते। जबकि एक-एक सीट बीजेपी-आरजेडी और सीपीआई(ठ) (छ) के खाते में गई। 2014 चुनाव का जनादेश-

अगर 2014 के चुनाव की बात करें तो सीवान के सांसद ओमप्रकाश यादव को 3,72,670 वोट मिले थे। उन्होंने राजद की हीना शहाब को 1 लाख 13 हजार वोटों से हराया। राजद प्रत्याशी हीना शहाब को 2,58,823 वोट मिले थे, वहीं सीपीआई माले के अमरनाथ यादव ने 81006 वोट और जेडीयू के मनोज सिंह ने 79,239 वोट हासिल किए थे। इहाँ तक सियासी संग्राम की बात करें तो आरजेडी माय समीकरण के सहारे ही चुनाव लड़ती हुई नजर आ रही है, तो वही एनडीए प्रत्याशी कविता सिंह राजनीतिक सूझबूझ और परिपक्वता के कारण मजबूती से चुनाव प्रचार में जुटी हुई हैं, मतदाताओं को केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा जनहित में चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं के बारे में बताकर वोट मांग रही हैं, एनडीए के साथ वर्तमान सांसद एवं घटक दलों भाजपा एवं लोजपा के बड़े नेता एवं कार्यकर्ता लगातार जनसम्पर्क कर रहे हैं।

एनडीए में बड़े भाई की भूमिका में दिख रही बीजेपी बूथ लेवल कार्यकर्ता मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए दिनरात एक कर लगातार जन सम्पर्क कर रहे हैं। दूसरी तरफ हेना शहाब राजद के कुछ विस्वस्त नेताओं के साथ प्रचार कर रही हैं। माले की बात करें तो अमरनाथ यादव मैदान में आकर लड़ाई

को त्रिकोणीय बनाने के लिए कसरत कर रहे हैं, वहीं सेवनिवृत डीआजी सुधीर कुमार सेवा अवधि में कुशल पुलिस पदाधिकारी एवं साफ सुधीर क्षमि के सहारे निर्दलीय चुनाव लड़ते हुए दो-दो हाथ करने को तैयार हैं। जिससे चुनावी समीकरण लगातार दिलचस्प होता जा रहा है। लेकिन मुख्य लड़ाई जदूय विधायक कविता सिंह एवं राजद नेत्री हेना शहाब के बीच ही माना जा रहा है।

एनडीए प्रत्याशी कविता सिंह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पाँच वर्षों के कार्यकाल के दौरान विकास कार्यों में शानदार उपलब्धि, एवं सर्जिकल स्ट्राईक एयर स्ट्राईक जैसे साहसिक फैसलों की तारीफ करते हुए सुरक्षित समृद्ध एवं वैभवशाली रस्ते के निर्माण के नाम पर मजबूत सरकार चुनते हुए नरेंद्र मोदी को दुबारा पीएम बनाने के लिए वोट मांग रही हैं तो दूसरी तरफ हेना शहाब भी विकास के मुद्दे पर ही वोट मांगती दिख रह है। वर्तमान सांसद ओम प्रकाश यादव लगातार कविता सिंह के पक्ष में वोट मांग रहे हैं तो दूसरी तरफ राष्ट्रवाद के नाम पर देश का युवावार्ष चाहे वह किसी भी धर्म या जाति से आत हो उसकी दीवानगी नरेंद्र मोदी की तरफ दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। जिससे माय समीकरण धरातल पर दिखाई नहीं दे रहा है। दूसरी वजह यह ही है कि सांसद ओम प्रकाश यादव विगत दस वर्षों के कार्यकाल में यादव वर्ग पर मजबूत पकड़ बना चुके हैं। भले ही मुस्लिम समुदाय बीजेपी से दूरी बनाकर रहता है लेकिन पिछड़े दलित शोषित एवं पसमांदा मुसलमानों का एक बड़ा हिस्सा विगत पन्द्रह वर्षों से नीतीश कुमार को लगातार मतदान करता आ रहा है। कविता सिंह चूंकि जदूय विधायक हैं और जदूय के टिकट पर ही चुनाव लड़ रही हैं इसके कारण सभी जाति धर्म के मतदाताओं में उनकी गहरी पकड़ है। बावजूद इसके सिवान की सियासी लड़ाई बेहद दिलचस्प होने के क्यास लगाए जा रहे हैं। चुनाव में करीब एक महीने का समय अभी बाकी है ऐसे में राजनीतिक घड़ी किस करवट अंगड़ाई लेती है यह आने वाले कुछ सप्ताह में और स्पष्ट हो जाएगा।

झूम उठा एलिट : संस्थान के सभी छात्र प्रथम-श्रेणी से उत्तीर्ण

बिहार के इन्जीनियरिंग और मेडिकल-प्रवेश परीक्षाओं के लिये प्रतिष्ठित संस्थान एलिट इन्स्टिच्यूट में बिहार बोर्ड की बारहवीं के परीक्षाफल के आते ही बच्चे के अंदर खुशी की लहर फैल गई। संस्थान के सभी बच्चे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुये हैं। एलिट से 78 बच्चे बिहार बोर्ड से इंटर की परीक्षा दिये थे, जिसमें 53 बच्चों का रिजल्ट 75 प्रतिशत से 91 प्रतिशत के बीच में है। सफल छात्र-छात्राओं में शुभम ठाकुर, मनीष केशव, संजय कुमार, नन्दनी कुमारी, गौरव कुमार, अंशु कुमारी, उत्कर्ष कुमार, प्रियांशु सिंह, नेहा कुमारी के नाम उल्लेखनीय हैं। संस्थान के निदेशक अमरदीप ज्ञा गौतम ने इस शानदार सफलता पर छात्रों को बधाई देते हुए कहा कि सही दिशानिर्देश और कड़ी मेहनत के कारण छात्रों ने सफलता हासिल कर इंस्टिच्यूट का नाम रौशन किया है।



पूर्वी चम्पारण लोकसभा सीट

राजनीति के पुराने धुरंधर के सामने नए खिलाड़ी



अनूप नारायण सिंह

पूर्वी चंपारण लोकसभा सीट से एनडीए गठबंधन के तहत भाजपा ने केंद्रीय कृषि मंत्री तथा वर्तमान सांसद राधा मोहन सिंह अपना उम्मीदवार बनाया है वहीं दूसरी तरफ महागठबंधन के तरफ से यह सीट राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के खाते में गई है जहां से राष्ट्रीय लोक समता पार्टी ने पूर्व केंद्रीय मंत्री व कांग्रेस से राज्यसभा सासद अखिलेश सिंह के बेटे 27 वर्षीय आकाश सिंह को अपना उम्मीदवार बनाया आकाश अमेरिका से पढ़ कर आए हैं राजनीति में उनकी नई पारी है। राजपूत और भूमिहार मतों की गोलबंदी के सहरे अपनी नैया पार लगाने की कोशिश में लगे भाजपा और गठबंधन के दोनों उम्मीदवारों के भाय का फैसला मोदी मैजिक व लालू के माय समीकरण के भरोसे ही होना है।

पूर्वी चंपारण लोकसभा सीट चंपारण की धरती का सबसे अहम संसदीय सीट और बिहार की सियासत में काफी अहम माना जाता है। 2002 के परिसीमन के बाद 2008 में अलग से ये सीट भी अस्तित्व में आया। यहां से वर्तमान सांसद हैं केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह। 2009 और 2014 में राधामोहन सिंह ने इस सीट से चुनाव जीता। इससे पहले भी वे इस सीट से 2 बार सांसद रह चुके हैं। परिसीमन से पहले पूर्वी चंपारण लोकसभा सीट मोतिहारी सीट के नाम से जानी जाती थी। आजादी के बाद से इस सीट पर कांग्रेस का बर्चस्व



रहा था। लेकिन 1977 में जनता पार्टी उम्मीदवार ने पहली बार इस सीट पर कब्जा जमाया। उसके बाद इस सीट से 5 बार बीजेपी जीती।

1952 में देश में हुए पहले चुनाव से ही इस सीट पर कांग्रेस का परचम लहराया। 1971 तक इस सीट से पांच बार कांग्रेस के विभूति मिश्र विजयी रहे थे। लेकिन इमरजेंसी के बाद हुए 1977 के चुनाव में यहां का गणित बदला। जनता पार्टी के ठाकुर रामपति सिंह चुनाव जीते और कांग्रेस का बर्चस्व खत्म हुआ। 1980 में यहां से सीपीआई के कमला मिश्र मधुकर जीते। 1984 में कांग्रेस की प्रभावति गुप्ता जीती। 1989 में यहां से बीजेपी ने अपने पुराने कार्यकर्ता और आरएसएस स्वयंसेवक राधामोहन सिंह को उतारा। राधामोहन सिंह चुनाव जीत गए। 1991 में फिर सीपीआई के टिकट पर कमला मिश्र मधुकर चुनाव जीते। लेकिन 1996 का चुनाव जीतकर फिर राधामोहन सिंह ने अपना परचम लहराया।

1998 के चुनाव में राधामोहन सिंह चुनाव हार गए और आरजेडी की रमा देवी चुनाव जीतकर लोकसभा पहुंचीं। लेकिन 1999 में अटल लहर में बीजेपी के टिकट पर राधामोहन जीत हासिल करने में कामयाब रहे। 2004 में फिर इस सीट पर सियासत ने पलटी मारी और बीजेपी को हार का सामना करना पड़ा। आरजेडी के ज्ञानेंद्र कुमार जीतने में कामयाब रहे। 2002 में लोकसभा सीटों के परिसीमन के लिए कमेटी बनी और 2008 में

मोतिहारी सीट पूर्वी चंपारण के नाम से अस्तित्व में आया। यहां से फिर इस सीट पर बीजेपी का कमल खिला शुरू हुआ। अगले दो चुनाव 2009 और 2014 के दो चुनावों में राधामोहन सिंह को जीत हासिल हुई।

पूर्वी चंपारण सीट का समीकरण

इस लोकसभा क्षेत्र में वोटरों की कुल संख्या 1,187,264 है। इनमें से 640,901 पुरुष वोटर और 546,363 महिला वोटर हैं।

विधानसभा सीटों का समीकरण

बिहार की पूर्वी चंपारण लोकसभा क्षेत्र के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- हरसिंहद्वी, गोविंदगंज, केसरिया, कल्याणपुर, पिपरा और मोतिहारी। 2015 के विधानसभा चुनाव में इन 6 सीटों में से 3 बीजेपी ने, 2 आरजेडी ने और 1 सीट एलजेपी ने जीती थी।

2014 चुनाव का जनादेश

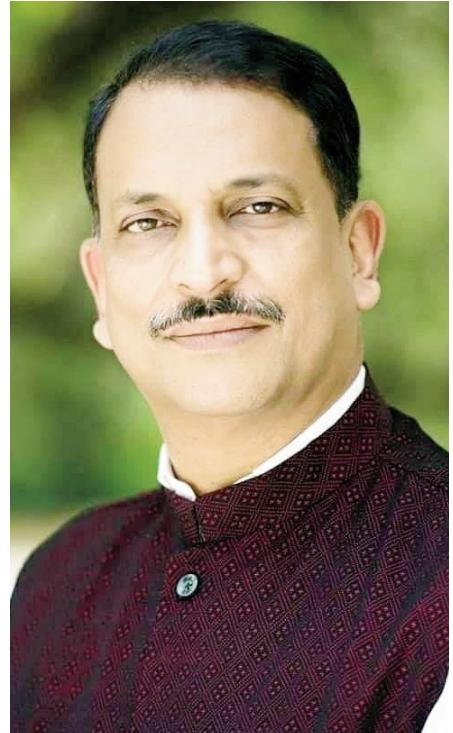
2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी के राधामोहन सिंह ने आरजेडी के विनोद कुमार श्रीवास्तव को हराया। राधामोहन सिंह को 4,00,452 वोट मिले थे। जबकि आरजेडी उम्मीदवार विनोद कुमार श्रीवास्तव को 2,08,289 वोट तीसरे नंबर पर जेडीयू उम्मीदवार अवनीश कुमार सिंह रहे थे जिन्हें 1,28,604 वोट हासिल हुए थे।

सारण के संग्राम में जातीय समीकरण है हावी

अनूप नारायण सिंह

राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की कर्मभूमि रहे सारण लोकसभा क्षेत्र में इस बार लालू प्रसाद यादव के समधी तथा परसा से राजद विधायक चंद्रिका राय पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ रहे हैं उनका मुकाबला निर्वत्मान भाजपा सांसद राजीव प्रताप रुड़ी से है। धारा के विपरीत चलने वाले सारण लोकसभा क्षेत्र में इस बार जहां राजीव प्रताप रुड़ी मोदी ऐंजिक भाजपा के आधार गत बोटों की गोलबंदी तथा पिछले 2 वर्षों से क्षेत्र में किए गए अपने कार्यों की बदौलत जनता को दिखाने का प्रयास कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ राजद प्रत्याशी चंद्रिका राय को राजद के मुस्लिम यादव समीकरण का भरोसा है।

सारण सीट बिहार की सबसे हाई प्रोफाइल संसदीय सीट मानी जाती है। 2008 के परिसीमन से पहले इसका नाम छपरा था। छपरा शहर सारण जिले का मुख्यालय भी है। ये सीट राजपूतों और यादव समुदाय का गढ़ माना जाता है। चुनावी लड़ाई में इसका असर भी देखने को मिलता है। यादव-मुस्लिम बोटों के समीकरण से यहां से लालू यादव 4 बार सांसद रह चुके हैं। लालू यादव ने अपनी संसदीय पारी की शुरूआत 1977 में यहां से की थी। उनकी पत्नी राबड़ी देवी भी यहां से चुनाव लड़ चुकी हैं। यहां के वर्तमान सांसद हैं बीजेपी के युवा नेता राजीव प्रताप रुड़ी। जो कि 3 बार सांसद रहे हैं। रुड़ी अटल सरकार में भी मंत्री रह चुके हैं। 2014 में जीतने के बाद वे मोदी सरकार में भी मंत्री बनाए गए थे। हालांकि, मंत्रिमंडल के फेरबदल में उनसे मंत्री पद वापस ले लिया गया। वे बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं। लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन्म सारण के सिताब दियारा में हुआ था। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री दरोगा राय भी सारण के ही रहने वाले थे। दरोगा राय के बेटे चंद्रिका राय परसा विधानसभा सीट से विधायक हैं। उनकी बेटी ऐश्वर्या राय की शादी लालू यादव के बेटे तेजप्रताप से हुई। गंगा, गंडक एवं घाघरा नदी से घिरा सारण जिला भारत में मानव बसाव के सार्वाधिक प्राचीन केंद्रों में एक है। यह समतल एवं उपजाऊ इलाका है। भोजपुरी यहां की भाषा है। सोनपुर मेला, चिरांद पुरातत्व स्थल यहां की पहचान हैं। मढ़ौरा का चीनी मील और मर्टन मील बिहार के पुराणे उद्योगों के प्रतीक थे। रेल चक्का कारखाना, डीजल रेल इंजन लोकोमोटिव कारखाना, सारण इंजिनियरिंग, रेल कोच फैक्ट्री भी यहां है। हालांकि शिक्षा और रोजगार के लिए बड़े शहरों की ओर पलायन यहां की आम समस्या है। 2008 के परिसीमन से पहले सारण लोकसभा सीट छपरा के नाम से जानी जाती था। इस सीट से 1957 के चुनाव में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के राजेंद्र सिंह चुनाव



जीते थे। 1962, 1967 और 1971 में कांग्रेस के राजशेखर प्रसाद सिंह यहां से चुनाव जीते थे। 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर लालू यादव यहां से सांसद बनकर दिल्ली पहुंचे। 1980 में जनता पार्टी के सत्यदेव सिंह और 1984 में कांग्रेस के योगेश्वर प्रसाद योगेश तथा 1985 में जनता पार्टी के राम बहादुर सिंह सांसद बने।

1989 में जनता दल के टिकट पर लालू यादव छपरा से लोकसभा चुनाव दोबारा जीते। 1991 में जनता दल के लाल बाबू योगेश्वर प्रसाद योगेश ने यहां से सांसद बने। 1996 के चुनाव में बीजेपी ने राजीव प्रताप रुड़ी को मौका दिया। रुड़ी चुनाव जीतकर संसद पहुंचे। इसके बाद 1998 में आरजेडी के हीरालाल राय जीते। 1999 के अटल लहर में रुड़ी जीतकर फिर संसद पहुंचे। लेकिन 2004 में लालू यादव ने छपरा सीट से चुनाव लड़ा और रुड़ी को मात दी। 2008 में सारण नाम से इस सीट का परिसीमन हुआ। 2009 के चुनाव में भी लालू यादव यहां से जीते। चारा घोटाले में सजा हो जाने के बाद लालू के चुनाव लड़ने पर रोक लग गई और 2014 में राबड़ी देवी इस सीट से उतरीं। मोदी लहर में आरजेडी के सारे समीकरण फेल हो गए और चुनाव जीतकर फिर राजीव प्रताप रुड़ी संसद पहुंच गए। सारण लोकसभा क्षेत्र में बोटों की कुल तादाद 1,268,338 है। इसमें से 580,605 महिला मतदाता हैं जबकि 687,733 पुरुष

मतदाता हैं। सारण संसदीय सीट के तहत विधानसभा की 6 सीटें आती हैं- मढ़ौरा, छपरा, गरखा, अमनौर, परसा और सोनपुर। 2015 के बिहार विधानसभा चुनाव में इनमें से 4 सीटें आरजेडी ने और 2 सीटें बीजेपी ने जीती। बाहुबली प्रभुनाथ सिंह के जेडीयू छोड़ आरजेडी में जाने का फायदा यहां की सीटों पर आरजेडी को हुआ। छपरा विधानसभा सीट से प्रभुनाथ सिंह के बेटे रंधीर सिंह मैदान में थे। हालांकि बीजेपी उम्मीदवार डॉ. सीएन गुप्ता के हाथों उनकी हार हुई। 2014 में सारण सीट से बीजेपी के उम्मीदवार राजीव प्रताप रुड़ी जीते थे। रुड़ी ने लालू यादव की पत्नी और बिहार की पूर्व सीएम राबड़ी देवी को हराया। चारा घोटाले में सजा होने के बाद लालू यादव की सदस्यता छिन जाने के बाद राबड़ी देवी सारण से चुनाव मैदान में उतरी थीं। लेकिन मोदी लहर में जीत बीजेपी के हाथ लगी। राजीव प्रताप रुड़ी को 3,55,120 वोट मिले थे। जबकि राबड़ी देवी को 3,14,172 वोट। जेडीयू के सलीम परवेज 1,07,008 वोटों के साथ तीसरे नंबर पर रहे थे। इससे पहले 2009 के चुनाव में सारण सीट से आरजेडी चीफ लालू यादव जीते थे। लालू यादव को 2,74,209 वोट मिले थे। जबकि राजीव प्रताप रुड़ी को 2,22,394 वोट। सलीम परवेज तब भी तीसरे नंबर रहे थे। लेकिन उस समय वे बसपा के टिकट पर उतरे थे। उन्हें 45,027 वोट मिले थे।

बिहार में चिकित्सा के क्षेत्र में काफी संभावनाएं .. हड्डी नस रोग, जोड़ प्रत्यारोपण एवं बाल विकास विशेषज्ञ डॉ सुनीत रंजन



अनूप नारायण सिंह

आज आपको एक ऐसे चिकित्सक से मिलवाने जा रहे हैं जिन्होंने बाल विकलांगता पर शोध करने के बाद देश के अन्य प्रांत और विदेशों में नौकरी करने की अपेक्षा बिहार को अपने कार्यक्षेत्र ही नहीं बनाया है बल्कि लोगों के दिल में भी जगह बनाई है. पैसा कमाना इस चिकित्सक का ध्येय नहीं इस चिकित्सक का ध्येय बिहार से बाल विकलांगता को मिटाना है. चिकित्सक को धरती का भगवान कहा जाता है पर आज के आर्थिक युग में चिकित्सा पेशा भी पूरी तरह से बाजारबाद के चपेट में आ गया है ऐसे दौर में बिहार के सिवान जिले के दरौदा के एक किसान परिवार से आने वाले युवा चिकित्सक डॉ सुनीत रंजन ने करोड़ों का पैकेज छोड़ बिहार की राजधानी पटना को अपना कार्यक्षेत्र बनाया है श्री सुरेश सिंह और श्रीमती कृष्णा देवी के घर पुत्र रत्न के रूप में जन्मे डॉ सुनीत रंजन सिवान जिले के दरौदा थाना अंतर्गत धनीती गांव के रहने वाले हैं. उनकी प्रारंभिक शिक्षा दरौदा तथा बाद की शिक्षा कॉलेज ऑफ कॉमर्स पटना में हुई उसके बाद इन्होंने मैसूर से एमबीबीएस, एम एस अर्थो गवर्नर्मेंट मेडिकल कॉलेज पटियाला से फैलोशिप मैक्स सुपर हॉस्पिटल नई दिल्ली से कंजनाइटल स्पेशलिटी अनु हॉस्पिटल विजयवाडा से किया तत्पश्चात असिस्टेंट प्रोफेसर के तौर पर पद्मावती मेडिकल कॉलेज तिरुपति से जुड़े । मार्च 1980 को जन्मे डॉ सुनीत रंजन वर्ष 2012 में डा. अनुभूति सिंह के साथ परिणय सूत्र में बंध. बातचीत में उन्होंने बताया कि जन्मजात विकलांगता पर उन्होंने शोध किया है एशिया का सबसे बड़ा हॉस्पिटल बालाजी हॉस्पिटल है जहां पर पूरे देश

भर के मरीज जाते हैं बिहार के मरीजों को वहां पर आने-जाने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था इसी को ध्यान में रखकर 16 जनवरी 2019 को पटना के कंकड़बाग इलाके के मलाही पकड़ी चौक पर मैक्स केरार हॉस्पिटल की स्थापना की. उन्होंने बताया बच्चों की हड्डी संबंधी रोग पर उन्होंने शोध किया है और इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने क्षेत्र निजी क्षेत्र में क्रातिकारी शुरूआत के तौर पर पटना में खुद का हॉस्पिटल खुला है. जहां बेहतर इलाज की व्यवस्था भी न्यूनतम राशि खर्च पर उपलब्ध है. उन्होंने बताया कि बच्चों में शारीरिक विकलांगता का उपचार संभव है अगर उन्हें सही समय पर इलाज के लिए लाया जाए उनके हॉस्पिटल में बाल विकलांगता हड्डी रोग संबंधी सभी प्रकार के रोगों का अत्याधुनिक तरीके से इलाज की पूरी व्यवस्था है गरीब और लाचार मरीजों के लिए इनके यहां विशेष व्यवस्था हैं मध्यम वर्गीय

परिवार से आने के कारण उन्होंने आम जनजीवन में महसूस किया है कि एक चिकित्सक का दायित्व केवल पैसा कमाना ही नहीं समाज सेवा करना भी है और उनके यहां से इसलिए मरीज वापस नहीं जा सकता कि उसके पास पैसा नहीं वे बताते हैं कि यहां का अनुभव काफी मर्मिक हैं जिनके पास इलाज व दवा का पैसा नहीं होता है लेकिन ये अपने तरफ से उनके इलाज की व्यवस्था करते हैं उन्हें काफी सुकून मिलता है. डॉ सुनीत रंजन ने बताया कि बिहार में चिकित्सा के क्षेत्र में काफी संभावनाएं यहां के मरीज देशभर में इलाज कराने जाते हैं अगर उन्हें पटना में ही सस्ता और बेहतर पूरा इलाज उपलब्ध कराया जाए तो काफी सहूलियत होगी इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने एक अभियान की शुरूआत की है डॉ सुनीत बिहार के सुदूर गांव में भी मेडिकल कैंप करके लोगों के इलाज के लिए तत्पर रहते हैं.



अदम्या आदिति गुरुकुल में हुआ नवनियुक्त दरोगा अभ्यर्थियों का अभिनंदन



15 मार्च 2019! वेद और कुराण के ज्ञाता तथा ख्याति प्राप्त इतिहासविद् चर्चित शिक्षक गुरु डॉ एम रहमान के अदम्या आदिति गुरुकुल नया टोला गोपाल मार्केट में बिहार दरोगा परीक्षा 2019 में अंतिम रूप से चयनित अभ्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें 500 से ज्यादा उपस्थित अंतिम रूप से चयनित दरोगा अभ्यार्थियों को गुरु डॉ एम रहमान ने सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इस बार कुल परीक्षाफल में जितने भी छात्र छात्रा सफल हुए हैं वे सभी उनके गुरुकुल में किसी न किसी रूप से जुड़े हुए थे 1500 से ज्यादा छात्रों ने नियमित रूप से क्लास रूम में तैयारी की जबकि अंतिम रूप से चयनित सभी छात्र-छात्राओं ने उनके यहां टेस्ट सीरीज में भाग लिया।

गरीब छात्रों से महज 11रु की गुरुदक्षिणा ली गई। इस अवसर पर डॉ रहमान ने बताया कि बिहार दरोगा में नियुक्त 1665 अपने बच्चों को कामयाबी को देखकर अद्या आदिति गुरुकुल गर्व महसूस कर रहा है, मेरा

उद्देश्य हर गरीब, अनाथ, असहाय बच्चों को सफलता दिलाने है जो कि मैं वर्षों से करता आ रहा तथा जब तक जिंदा रहूँगा करता करूँगा, आज बच्चों को सफल देख गर्व हो रहा इन बच्चों पे जिन्होंने बहुत सी सच्चाई को प्रमाणित कर दिया पहला सच्चाई तो ये की संघर्ष से इंसान जो चाहे हासिल कर सकता बस उसमें पागलपन का जुनून होना चाहिए कुछ भी हासिल करने के लिए और दूसरा सच्चाई ये की जो बच्चे गरीब है उन्होंने सफलता को अंजाम दिया है उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि "गरीबी का विकल्प लाचारी नहीं बल्कि कामयाबी है" इंसान चाहे गरीब ही क्यों न हो अगर उसके पास जुनून हो तो ओ कुछ भी कर सकता है।

"मजिल पाने का जुनून हो तो अंखों से लहू बनकर टपकता है" को चरितार्थ करते हुए अद्या आदिति गुरुकुल के बच्चों ने जिस तरह सफलता हो अंजाम दिया गुरुकुल आप सभी पे गर्व महसूस कर रहा है साथ ही साथ यह आशीर्वाद देता है कि आप दरोगा ज्वाइन करने के बाद अपने कर्तव्यों को ईमानदारी एवं लगन

से निभाये, बैरेंमान को बेल नहीं तथा ईमानदार को जेल नहीं को हमेसा चरितार्थ करे, जिससे कि आप जहाँ भी पोस्टिंग रहे वहाँ के लोग आपके गर्व करे जिसके की आपका एवं गुरुकुल का मान सम्मान बढ़े, बिहार के कोना कोना तक गुरुकुल के विचारधारा को बच्चा-बच्चा जाने।

आयोजित सम्मान समारोह में पटना कॉलेज के प्राचार्य डा. रामाशंकर आर्य आदिति गुरुकुल के शिक्षक शशि कुमार सिंह अमरजीत कुणाल फर्स्ट कुणाल सेकंड सुबोध कुमार मिश्र शशांक शेखर डॉ राजकुमार सिंह अनूप नारायण सिंह निशु गुप्ता समेत कई गण्यमान जन उपस्थित थे। अदम्या आदिति गुरुकुल, एम सिविल सर्विसेज के निदेशक संस्थान के निदेशक मुन्ना जी मैं आगत अंतिमियों को पुष्ट गुच्छ देकर स्वागत किया इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गरीबी का विकल्प सिर्फ और सिर्फ सफलता ही हो सकती है गुरु रहमान के नेतृत्व में संस्थान का यह अभियान आगे भी पूरी ईमानदारी से जारी रहेगा।

चर्चित बिहार पत्रिका का माना छठवां वर्षगांठ परिस्थिति कोई भी हो न्याय के पथ पर अग्रसर रहना चाहिए - स्मृति ईरानी

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को किया गया सम्मानित



दिल्ली के कंस्टीटूशन क्लब में गत 23 फरवरी को प्रमुख हिंदू मासिक पत्रिका 'चर्चित बिहार' की छठवां वर्षगांठ मनाई गई और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी थी। उन्होंने दिनकर के इन पर्कियों से अपना सम्बोधन किया कि "शोभा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो, उसको क्या जो दंत हीन विष्वीन सरल हो।" उन्होंने कहा कि परिस्थिति कोई भी हो, कैसी भी हो, फिर भी सर उठा कर न्याय के पथ पर हमेशा अग्रसर रहना चाहिए। चर्चित बिहार पत्रिका और इसके संपादक ने इस मंत्र को अपनाते हुए जो लगातार 6 वर्षों से सफलतापूर्वक

और यह काम चर्चित बिहार के संपादक अभिजीत और उनकी टीम कर रही है। जो काफी सराहनीय है तथा वो अभिनंदन के पात्र हैं। केंद्रीय मंत्री ने बिहार के महिलाओं के संघर्ष और सफलता की भूरी भूरी प्रशंसा की तथा मैडिया के माध्यम से इन सफल महिलाओं के कार्यों को समाज के सामने खेलने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि परिस्थिति चाहे कोई भी हो कैसी भी हो फिर भी सर उठा कर न्याय के पथ पर हमेशा अग्रसर रहना चाहिए। चर्चित बिहार पत्रिका और इसके संपादक ने इस मंत्र को

प्रकाशन का कार्य कर रहे हैं यह काफी सराहनीय है। बिहार के उत्कृष्ट बहनें जो संघर्ष से आगे निकलकर समाज और देश का नाम रोशन किया है उनके योगदानों की विशेष चर्चा होनी चाहिए।

वर्षगांठ सह सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए सांसद व ख्याति प्राप्त भौजपुरी कलाकार मनोज तिवारी ने कहा कि बिहार में कई बिहार हैं एक बिहार जो पढ़ा नहीं निरक्षर है और बदहाली ओं से जूँझ रहा है तो वहीं दूसरा बिहार भी है, जिससे आप बात कीजिए तो ऐसा पता चलता है कि दुनिया की विद्रोता और दर्दशन इनमें कूट-कूट कर भरा हुआ

है। आर्यभट्ट, दिनकर, जयप्रकाश नारायण और शेरशाह की चर्चा करते हुए मनोज तिवारी ने कहा कि बिहार में हम लोगों ने वह दिन भी देखा है कि घर में चूल्हा जलाने के लिए आग दूसरे के घरों से मांगना पड़ता था वहीं केंद्र सरकार द्वारा चलाई गई उजला योजना के फलस्वरूप आज घर घर में अनपढ़ महिलाएं भी गैस के चूल्हे पर खाना बना रही हैं।

समारोह को पत्रिका के संरक्षक सह बिहार विधान परिषद के सदस्य संजय मयूख ने कार्यक्रम के मुख्य

अतिथि स्मृति ईरानी के संघर्ष और सफलता की चर्चा करते हुए कहा कि जिस बहन ने जनपथ पर 200 रुपया दिहाड़ी में काम की शुरूआत करते हुए अपने संघर्ष और प्रतिभा के बल पर महिला सशक्तिकरण का संदेशवाहक बन चुकी है वह काबिले तारीफ है। और इन से प्रेरणा लेनी चाहिए। वर्षगांठ सम्मान समारोह में पत्रकारिता, सामाजिक कार्य व स्वच्छता के क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाले लोगों को केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने प्रतीक चिन्ह तथा सांसद मनोज तिवारी ने शॉल देखकर सम्मानित

किया। समारोह को सांसद अनिल बलूनी, अनुसूचित जाति आयोग के सदस्य योगेंद्र पासवान, दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र से पार्षद मनीष चौधरी, पूर्वांचल मोर्चा दिल्ली के अध्यक्ष मनीष सिंह जैसे कई गणमान्य लोगों ने संबोधित किया, और पत्रिका के सफल प्रकाशन की प्रशंसा करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। वर्षगांठ सम्मान समारोह की अध्यक्षता चर्चित बिहार पत्रिका के युवा संपादक अभिजीत ने की और मंच संचालन प्रभाकर राय ने किया।







चुनाव से पहले ही बिहार कांग्रेस में घमासान

टिकट बंटवारे में धन बल प्रयोग का आरोप, कार्यकर्ताओं में उबाल



अखिलेश कुमार

पहले से ही बिहार में संक्रमण काल से गुजर रहे कांग्रेस पार्टी में लोकसभा चुनाव होने से पहले ही घमासान शुरू हो गया है, और आए दिन पार्टी के प्रदेश कार्यालय सदाकात आश्रम में हंगामा तथा मार पीट देखने को मिल रहा है। गत 3 अप्रैल को पार्टी चुनाव अभियान समिति के बैठक के दौरान भी पार्टी कार्यालय में हंगामा के साथ धक्का-मुक्की और मारपीट देखने को मिला। धक्का-मुक्की के शिकार पार्टी के प्रदेश प्रभारी शक्ति सिंह गोहिल भी बने और कार्यकर्ताओं ने पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन मोहन झा, राज्यसभा सांसद अखिलेश सिंह तथा प्रदेश प्रभारी शक्ति सिंह गोहिल पर पार्टी के लिए समर्पित और संघर्षरत लोगों को दरकिनार करने का आरोप लगाया। सबसे अधिक नाराजगी पूर्व राज्यपाल तथा औरंगाबाद से वर्ष 2014 के चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर सांसद बने निखिल कुमार के टिकट कटने को ले कर रही। कार्यकर्ताओं का कहना था कि निखिल कुमार का तीन पिछी कांग्रेस के लिए समर्पण की भावना से कार्य करता रहा है। वह एक ईमानदार स्वच्छ तथा सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। इसके बावजूद एक साजिश के तहत उनकी टिकट काट दी गई। पार्टी कार्यकर्ता प्रदेश मुख्यालय में यह नारा लगा रहे थे की चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष अखिलेश सिंह राष्ट्रीय

जनता दल के दलाल हैं तथा जानबूझकर सीट बंटवारे में और टिकट देने में समर्पित लोगों को नजरअंदाज कर रहे हैं कांग्रेस कार्यकर्ता काराकाट लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से निखिल कुमार को उम्मीदवार बनाए जाने की मांग पर अड़े हुए थे उनका कहना था कि राज्यसभा सांसद अखिलेश सिंह ने एक साजिश के तहत निखिल कुमार का टिकट काटकर अपने बेटे आकाश सिंह को महागठबंधन में रालोसपा से मोतिहारी का उम्मीदवार बना दिया कार्यकर्ताओं की नाराजगी इस बात पर भी थी कि आखिर 2 सीट जीतने वाले उपेंद्र कुशवाहा के खाते में 5 सीट कैसे दे दी गई और कांग्रेस जैसे बड़े दल को बिहार में मात्र 9 सीट ही क्यों मिला सदाकात आश्रम पर बड़ी संख्या में उपस्थित आक्रोशित कार्यकर्ता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन मोहन झा पार्टी के प्रदेश प्रभारी शक्ति सिंह गोहिल तथा चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष अखिलेश सिंह के खिलाफ नरेबाजी कर रहे थे वही चुनाव अभियान समिति के कई सदस्यों तथा विधायकों की बैठक में अनुपस्थिति में भी पार्टी के अंदर सुलग रहे विद्रोह के सकेत दिए हालांकि निखिल कुमार इस बैठक में उपस्थित है तथा हंगामा कर रहे लोगों को समझाने का प्रयास कर रहे थे परंतु उनका भी किसी ने नहीं सुना इस संबंध में पार्टी के बिहार प्रदेश प्रभारी शक्ति सिंह गोहिल ने कहा कि कांग्रेस पार्टी मेरी मां के समान है और किसी भी हालत में मां का सौदा नहीं किया जा सकता है यह

हो सकता है कि उम्मीदवार चयन में कोई गडबड़ी हुई हो जिस की समीक्षा की जा सकती है लेकिन पैसे लेकर टिकट देने का आरोप बेबुनियाद और निराधार है वहीं आक्रोशित कार्यकर्ता इस बात पर अड़े हुए थे कि महागठबंधन के घटक दल राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा जब उजियारपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से उम्मीदवार के रूप में मैदान में आ रहे हैं तो काराकाट लोकसभा कांग्रेस को लेकर वहां से निखिल कुमार को मैदान में उतारना चाहिए विदित हो कि औरंगाबाद सिट महागठबंधन में जीतन राम माझी के नेतृत्व वाले हम पार्टी के अधीन चला गया है इसके चलते निखिल कुमार टिकट से वंचित रह गए हैं पूर्व में जब वर्ष 2004 में औरंगाबाद लोकसभा क्षेत्र से निखिल कुमार सांसद बने थे तो वर्तमान काराकाट लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र का 3 विधायक सभा नवीनगर ओबरा तथा रफीगंज तत्कालीन औरंगाबाद लोकसभा के अधीन नहीं हुआ करता था जो वर्ष 2009 में नए परिसीमन के बाद काराकाट लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में आ गया है हालांकि राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा ने उजियारपुर के साथ ही काराकाट लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से भी चुनाव लड़ने का फैसला किया है काराकाट लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र महागठबंधन में रालोसपा कोटे को आर्वाणित कर दिया है।

यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:

बीते सालों में वक्त के साथ-साथ बदलते जमाने में बहुत बदलाव आया है। पुरानी दकियानूसी सोच को त्यागकर समाज ने नारी को घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर अपने सपनों को पूरा करने की आजादी दें दी है। पहले महिलाओं का दायरा सिर्फ घर और परिवार तक ही सीमित था, लेकिन आज वह दायरा काफी बढ़ गया है। हाँ यह बात सच है कि आज हर स्त्री, पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है, परंतु आपको शायद अजीब लगे कि यह एक अद्भुत सत्य है।

वास्तव में किसी को मिली आजादी आज भी अद्भुती ही बैठकी उसकी परिस्थितियां जरूर बदली हैं लेकिन स्थिति और उसकी प्रति सोच नहीं। आजादी और अत्मनिर्भरता के नाम पर उन्हें बहुत निकलकर अपने सपनों को पूरा करने की आजादी दें दी है। अफिस या काम से वापस घर लौटते खड़ी और पुरुष के प्रति अलग-अलग सोच और उनकी स्थितियों के देखकर यह कहना उचित लगता है। बाहर भले ही महिलाएं अपना औहाड़ और सम्मान बढ़ा पाई हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि परिवार की सोच और नजरिया भी उनके प्रति देखा ही हो जैसा कि बाहरी दुनिया में। इर में उसके प्रति सोच और उसकी स्थिति में आज भी ज्यादा कोई

उत्तर नहीं आया है। एक ही काम को करने वाले खड़ी पुरुष जब अपने पर पहुंचते हैं, तो जहाँ पुरुषों के प्रति विश्वास भाव होता है, जैसे - ऑफिस से आए हैं थक गए होंगे। गर्म वाय नाश्ता और अलग-अलग तरह से उठे रहने देने का प्राप्तान किया जाता है। फौना भी चाहिए।

लेकिन महिला कामकाजी हो तब भी और न हो तब भी, उसकी जिम्मेदारियां जस की तरह हैं। महिलाओं के लिए देखाना या चिंता की भाव अब ही दिखाई देता है, जो किंतु उसे उत्तर दिया जाता है। उसे घर आते ही गर्म वाय या नाश्ता परेसना नहीं बीच बनाना होता है, जो उनकी जिम्मेदारी है। किसी और का सोचना तो दूर, अपनी जिम्मेदारियों और

व्यस्तताओं के बीच बह खुद यह नहीं सोच पाती कि शायद वह भी थक गई होगी। कार्यस्थल से लौटते ही बच्चे, भोजन, बड़ी की देखाना जैसी जिम्मेदारियों के अलावा कई छोटी-छोटी वीजों की उसे तुरंत विता करनी होती है। यहाँ बात यह नहीं है कि महिलाओं को यह नहीं करना चाहिए। एक हृत, पृष्ठी, और मां के रूप में यह उनका कर्तव्य है, जिसके प्रति वह समर्पित है। परंतु बात उसे सोच की है जो जिस्तों को आज बाहर निकलने की छूट तो देती है। लेकिन उसका जिम्मेदारियों को साझा करना नहीं चाहती। आज के युग में जैसी महिलाएं पुरुषों की हर मायदे में बराबरी कर रही हैं, हमें समझने की जरूरत है कि जैसे पर महिलाएं क्या कहती हैं?



शिल्पी सलोनी का कहना है कि हर मुखियाल से लड़कर अपने जीवन की नायिका बनायें। शिकार नहीं, आपका अस्तित्व ही आपके जीवन का आधार है।



अनिता रोंग का कहना है कि एक महिला जिकित होती है तो एक परिवार जिकित होता है। महिलाओं को दे शिक्षा की तीव्रता रखना।



रिणा सिंह का कहना है कि हर तरह की जिम्मेदारियों को निनो द्वारा महिला अगे बढ़ावा दी जाए। इन्हें लगता है कि नारी भर रही है। उड़ान, ना कोई शिकायत न करें थाना।



प्रियंका सिंह का कहना है कि नारी का करने समाज, सशक्त नारी से ही बनेगा सशक्त समाज। नारी पूर्युता है। इतिहास में भी नारी को देखी को देख दिया गया है।



दीपिका का कहना है कि बराबरी का साथ निभाएं, महिलाएं अब आगे आए। बूढ़ा वीका को छोड़ महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुष की बराबरी कर रही हैं।



सिमरन का कहना है कि महिलाओं का हो विकास, उन्होंने की ही रुपी दस आए। यह समय की माहि है कि महिलाएं धर्म-परिवार के साथ साथ अपने क्रियाएं के बारे में सोचें।



शांति प्रिया का कहना है कि महिलाओं को अत्मनिर्भर करी, हर मुश्किल से उठे दूर करो। आम निर्भरता से ही नारी का जीवन खुशहाल होगा।



रिया का कहना है कि महिलाएं हैं देश की तरक्की का आधार, उनके प्रति बदली अपना विराम। पुरुषों को महिलाओं के प्रति अपना नजरिया बदलने की जरूरत है।



विकास और सशक्तीकरण बहुत जरूरी

भारत में महिलाओं की स्थिति ने छिड़ी कुछ सरियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिया जाता तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। अधूनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिष्ठान की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं। विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्शा बनाया गया है। हालांकि कुछ अन्य विद्वानों का नजरिया इसके विपरीत है। परंतु और कात्ययन जैसे प्राचीन भारतीय वाक्यरचनाओं का कहना है कि प्रारम्भिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। गुणन विद्या, वर्णन विद्या



Pic: Ravi Sharma
वनानी की जीजोगद से लेकर बच्चे पालने तक की जिम्मेदार बदूची निभा रही है। मैंने जीवन के हर मोड़ पर कुछ लड़की देखी हैं। मेरी शुरुआत पट्टना से हुई। मैंने विद्यार्थी में २०१५ में डीएस डिंडिया में डीएस ६ में रही। प्रिंसेस ऑफ विद्यार्थी का खिताब मैंने जीता। मिस्टर एंड मिसेस पट्टना में बैरेट कॉर्टेंस का खिताब मैंने जीता। विद्यालय में कम किया। आने वाले समय में मेरे पास कई एस्डीएम्स थे जैसे रेप शी, सीरियल्स आदि।

बाराहाट प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में वितीय अनियमितता उजागर



चालक ने राज्य सूचना आयोग का दरवाजा खटखटाया

हेमंत कुमार बाराहाट

बाराहाट प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में पूर्व एंबुलेंस चालक वासुदेव शाह के बचत ०४ ड्वेजी गई सरकारी राशि का अस्पताल प्रबंधन के द्वारा कोई ठोस ब्योरा उपलब्ध नहीं कराए जाने के बाद चालक चालाक वासुदेव शाह के द्वारा अपनी हक की लड़ाई के लिए प्रथम अपीलीय प्राधिकार के साथ समय बीतने के राज्य सूचना आयोग का दरवाजा खटखटाया है।

क्या है मामला

बाराहाट प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर वर्ष 2008 से तैनात चालक वासुदेवा के बचत खाता संख्या 3484 053685 पर अगस्त 2016 से लेकर दिसंबर 2016 तक अस्पताल प्रबंधन ने कुल 13800 की राशि बिना किसी पूर्व सूचना के भेजी उसके बाद

उक्त राशि को अकाउंटेंट ने निकासी करते हुए पैसे की मांग की जिस पर चालक के द्वारा विरोध किया गया विरोध में चालक को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ गया जिसके बाद चालक ने भेजी गई उक्त राशि के बारे में आरटीआई का इस्तेमाल करते हुए सूचना मांगी कि उक्त राशि किस मद में भेज गई है लेकिन समय के साथ अस्पताल प्रबंधन के द्वारा चालक को कोई भी ठोस जवाब नहीं दिया गया परिणामस्वरूप चालक के द्वारा प्रथम अपीलीय प्राधिकार में मामले को रखा गया वहां भी अस्पताल प्रबंधन के द्वारा मामले की जानकारी नहीं दिए जाने के बाद थक हारकर वादी ने बीते ५ फरवरी 2018 को राज्य सूचना आयोग के समक्ष मामले को रखा है इतना ही नहीं मामले को लेकर चालक वासुदेव शाह के द्वारा भेजी गई सरकारी राशि को अवैध रूप से उनके बचत खाता पर भेजने की शिकायत करते हुए स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव

सहित आयुक्त भागलपुर को भी आवेदन लिया है, चालक की माने तो ऐसे कई मामले और हैं जिनमें प्रबंधक के द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में तैनात कई कर्मी के बचत खाता पर अवैध राशि भेज कर उसे कमीशन देकर बाद में अवैध ब्यौरा दर्शाते हुए भुगतान करा लिया जाता है।

कहते हैं स्वास्थ्य प्रबंधक..... इस पूरे मामले पर स्वास्थ्य प्रबंधक अवधि किशोर श्यामला ने बताया कि मामला उनके कार्यकाल का नहीं है इसलिए वह इस संबंध में कुछ भी बता पाने में सक्षम नहीं है।

कहते हैं अधिकारी

वहीं इस पूरे मामले पर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर नीलांबर निलय ने बताया कि मामला उनके संज्ञान में नहीं आया है वह सिंह इस मामले को गंभीरता के साथ देख रहे।

बांका (लोक सभा चुनाव 2019) मतदान : 18 अप्रैल 2019

इस बार चुनेगें दंगल में सरजमी जुड़ जो नेता हो तूफानों में धीर वही, पतवार लिए जो खेता हो



राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)

बांका लोक सभा चुनाव की डुगडुगी बजने के साथ ही निर्धारित तिथि को बिभिन्न राजनीतिक पाटीयों एवं निंदिलीय पाटीयों के प्रत्याशीयों द्वारा नामांकन पर्चा दाखिल किया गया।

जिसमें गिरिधारी प्रसाद यादव-जदयू से ,जय प्रकाश नारायण यादव- राजद से, राज किशोर डंफ पप्पू यादव-झामुमो से, साथ निंदिलीय प्रत्याशी के रूप में- पुतुल कुमारी, उमाकांत यादव, प्रमोद सिंह बेलडन, प्रवीन कुमार झा, रफीक आलम, नीलू देवी, फैजानउंसारी, पवन ठाकुर, मोज कुमार साह, मृत्युंजय राय, एम.पी.यादव, सैयद आलम दार हुसैन, संजीव कुमार कुणाल, मो.अख्तर आलम, नरेश यादव, अमरजीत कुमार, कैलाश प्रसाद सिंह प्रमुख हैं दिनांक 27 मार्च को लोक सभा चुनाव के लिए स्कूटनी समाप्त होने के पश्चात 23 अभ्यर्थीयों में से 20 की उम्मीदवारी पक्की हो चुकी है। कागजी प्रक्रिया अधुरी रहने के कारण तीन लोगों का मिथिलेश सिंह, ललिता देवी, व. मो. जमालउद्दीन का नामांकन पर्चा रद्द हो गया।

चनाव में नाम बाप्स लेने की तिथि 29 मार्च है, निवाचन आयोग के निर्देश के अनुसार अगर 20 अभ्यर्थी चुनावी मैदान में रहते हैं तो जिले भर के हरेक बूथों पर दो- दो



नामांकन हेतु अपने प्रत्यावकों के साथ जाती निर्दलीय उम्मीदवार पुतुल कुमारी

ईवीएम लगाया जाएगा।

चुनावी सरणी प्रारंभ होने के साथ ही जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन की गतिविधियां काफी बढ़ गई हैं जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने चर्चित बिहार को बताया कि 1491 बूथों की तैयारी पूरी की जा चुकी है। जिसके तहत अमरपुर विधान सभा में -308, धौरेया में -326, बांका में 267, कटोरिया में - 261, एवं बेलहर में - 329 बूथों हैं जहां कुल 35 उड़नदस्तादल एवं 20 एस.एस.टी. 160 सेक्टर और 545 पीसीसीपी तैयार किये गए हैं। इधर चुनावी दंगल हेतु बिभिन्न राजनीतिक पाटीयों एवं निंदिलीय प्रत्याशीयों के द्वारा बिभिन्न क्षेत्रों में जनसंपर्क अभियान तेज हो गई है।



नामांकन हेतु अपने प्रत्यावकों के साथ जाते राजद प्रत्याशी जयप्रकाश नारायण यादव



नामांकन हेतु अपने प्रत्यावकों के साथ जाते झामुमो प्रत्याशी राजकिशोर उर्फ पप्पू यादव



नामांकन हेतु अपने प्रत्यावकों के साथ जाते जदयू के प्रत्याशी गिरधारी यादव

बांका (लोक सभा चुनाव 2019)

त्रिकोणीय संघर्ष के साथ दिलचस्प होगा मुकाबला

राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)



बांका लोक सभा चुनाव का दंगल त्रिकोणीय संघर्ष के साथ काफी दिलचस्प होगा. सत्ता पक्ष और विपक्ष एवं निर्दलीय प्रत्यासीयों के द्वारा मतदाओं को पिछले बिकास के आकड़े गिनाते हुए जनता के लिए कौन कितना समर्पित था, का बखान कर रहे हैं वही दूसरी ओर बाहरी भगाओव और बांका बचाओं के नारंगे के साथ ज्ञामुपो उम्मीदवार राजकिशोर उर्फ पप्पु यादव मतदाओं को रिज़िन की कोशिश कर रहे हैं।

जयप्रकाश नारायण यादव राजद से बांका के सांसद रहते हुए जनता के समक्ष अपने कार्यकाल के पांच बर्ष का अपना हिसाब प्रस्तुत कर जन विश्वास की लकीर खीच रहे हैं। इनके अनुसार 54 माह में 10 दिन का दौरा बांका संसदीय क्षेत्र के 10-10 गांव यानी 100 गांव तो 54 माह में 5400 गांवों का दौरा निरंतर किया। इस क्रम में पी.एम.जी.एस.वाई योजना के तहत 1500 कीलो मीटर, लम्बी सड़क का निर्माण कुल लागत 1 अरब 5 करोड़ की लागत से करवाया। इसके अलावे कुल 51 बड़े पुलों का निर्माण 22 शिलान्यास कुल लागत 1 अरब के साथ 29 पूलों की मंजूरी दिलाया। साथ ही सांसद कोटा का 25 करोड़ का कार्य स्वीकृत कराया। साथ ही सिंचाई के क्षेत्र में बौंसी डकाई नारायणा, रजौन शाखा (फुल्लीडुमर) बदुआ परियोजना एवं बेलहरना एवं चांदन डेम का जीणोधार कर बांका की जनता के समक्ष प्रदर्शित हुआ उनके अनुसार अब मतदाताओं के समाने परियोजना के लिए पुनः आया हु।

गिरिधारी यादव जदयू के बांका संसदीय सीट से इसवार उम्मीदवार हैं जनता के समक्ष विभिन्न कल्याण कारी योजनाओं को गिनाते हुए सत्ताधारी दल का प्रतिनिधित्व करते हुए जनता और क्षेत्र के हित में ही काम किया है अब फैसला जनता को करनी है। वे अपने विरोधी जयप्रकाश नारायण यादव के कार्य बखान को खारिज करते हुए कहा कि डकाई, बेलहरना एवं बदुआ डेमके जीणोधार हुत सवरसे पहले उन्होंने पहल की थी जब तकालिक कृषि मंत्री ललन सिंह ने उनके द्वारा स्वंयं स्थल का निरीक्षण करा कर राशि स्वीकृत करवा कर इन सभी सिंचाई परियोजनाओं का जीणोधार करा कर जिले के किसानों को सिंचाई हेतु जल का श्रोत उपल्ब्ध कराया। कक्षावारा बिद्युत परियोजना, एवं बोटलिंग प्लाट इंटर सीटी ट्रेन में अतिरिक्त ऐसी कोच आदि हमारी सरकार की पहल पर संभव हो पाया है, पटना से कोलकता जनशताब्दी एक्सप्रेस नं 12024/12023 जो चल रही है के बिषय में भी पहल की थी 2004 में सांसद



रहतेही उनके अनुसार बहुत सेएसे कार्यों को जनता के हित में लाया। वही अपनी बाबाहाँ लेने हेतु सांसद ने मेरे ही शिलापट पर अपना नाम दर्ज करा कर जनता के समक्ष विकास काब्खान किया जा रहा। अपितु 2019 के इस महासंग्राम में मतदाताओं के समक्ष यह आवेदन देने पहुंचे हैं कि फैसला आप के हाथों में अवसर दे कर दिखाऊंगा, कर्म पथ पर अड़िगा रह कर जनता के प्रति समर्पित रहुंगा।

पुतुलकुमारी निर्दलीय प्रत्याशी : याचना नहीं अब रण होगा, चुनावी समर भीषण होगा के उद्धोष के साथ जनता के समक्ष निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चानावी दंगल में अपना भाग्य आजमाने हेतु मैदान में उतर गई हैं। अपने मतदाताओं के नाम एक अपील में इन्होंने कहा कि देश के समक्ष प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा के साथ ईमानदार सिपाही की तरह बांका के लिए समर्पित रही परंतु बांका की सीट भारतीय जनता पार्टी के खाते में नहीं रही सीट सहयोगी सहयोगी दल के खाते में चली गई और सहयोगी दल ने बांका की जनता के साथ एक बार फिर 2009 की तरह छल किया मैं हमेशा दादा के दादा स्वर्गीय दिव्यजय सिंह के आदर्शों पर चली हूं बांका की जनता के मन को समझते हुए मैंने दादा के कर्मभूमि उनके अधूरे सपने और उनके साथ रहते हुए निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में आप सभी मतदाताओं के समक्ष चुनावी समर में हूं। अब फैसला आप सबों को कहना है। दादा स्वं दिव्यजय सिंह के कार्यकाल में बांका में रेल आना, मेंगा बिद्युत प्रोजेक्ट का आना उस समय तकालिक उपराष्ट्रपति और सिंह शेखावत के द्वारा मेगाप्लाट का शुभारंभ करवाना आदि अनगिनत

कार्यों के बारे में जनता को बताया। अपने सांसद काल में भी बांका को पर्यटन स्थल का दर्जा एवं मास्क लाईट को लगाने महती पहल की है साथ ही पिछला पांच बर्ष उनके अनुसार पूरे संसदीय क्षेत्रों का भ्रमण कर जनता के हर समस्याओं से रू बरू हुई, के बिषय में भी मेरी कोशिश जारी रही। पिछले दिनों संगठन से जुड़ कर भी मैंने क्षेत्रों कल भ्रमण की उसमे जे कमीयों हमे दिखी उस पर भी मेरी पैनी नजर होगी, इसके साथ ही उन्होंने चनावी समर में सबों से सहयोग की अपनी ल करते हुए एक संकल्प को भी देहराया। याचना नहीं अब रोण होगा, चुनावी समर भीषण होगा जिसमें जनता का साथ होगा। बहहाल इस चनावी समर में उंट किस करबट बैठेगा यह समय ही बताएगा। फिल हाल एक सर्वे के अनुसार बांका में हमेशे जातीय समीकरण में फैसला होता है। एकअंग जहां सर्वण बांगों को आरक्षण से बिरोधी दल के नेता नाराज हैं जिसका असर इस चुनाव में भी पड़ने के आसार दिख रहे बहीं सत्ताधारी पाटी विभिन्न बिकासात्मक पहलुओं से मतदाताओं को रिज़िन का काम कर रहे हैं। वही पुरुष कुमारी दादा के आदर्शों एवं पूर्व में किये गए बांका के लिए समर्पण का प्रमाण देते हुए मतदाताओं से अपील कर रही है। अमरपुर बिधान सभा, धौरेया बिधान सभा, एवं बेलहर बिधान सभा जदयू के खाते में रहने एवं बांका सहयोगी दल भाजपा के खाते में रहने के कारण जदयू प्रत्याशी के खाते में मतों की संख्या अधिक होगी? या यादव वर्ग तीन खेमों गिरिधारी, जयप्रकाश, राजकिशोर के खेमों में बंट कर फायदा पुरुष कुमारी को होने बाला है यह समय ही बताएगा। फिलहाल 18 अप्रैल मतदान की प्रतिक्षा में हैं सभी मतदाता।

बिकास से कोशो दूर बिहारिया पंचायत के कई गांव जहाँ युनावी मौसम में ही पहुंचत हैं कुछ नेताओं के प्रतिनिधि

आमोद कुमार दुबे



लोकसभा चुनाव के लिए चुनावी बयार तेज हो गई है नेताओं की गाड़ी अब एक बार फिर गांव के गलियों में दौड़ना शुरू कर देगी लेकिन चांदन प्रखंड के बिहारिया पंचायत अंतर्गत नोकाडीह छब्ला और कुरेबा आज भी ऐसे गांव हैं जहाँ गांव में आज तक किसी पदाधिकारी को नहीं देखा गया है। इतना ही नहीं गांव में चुनाव के बक्त ही कुछ नेता और पंचायत प्रतिनिधि भी आते हैं लेकिन चुनाव के बाद ना तो इस गांव की सुध लेने कोई नेता आता है और ना ही कोई पंचायत प्रतिनिधि। इस तीनों गांव में जाने के लिए कोई कच्ची सड़क भी नहीं है। खासकर बरसात के दिनों में यहाँ के लोगों को काफी परेशानी होती है। अगर कोई व्यक्ति बीमार होता है तो 8 से 10 किलोमीटर तक पैदल चलकर अस्पताल पहुंचना पड़ता है। इतना ही नहीं शिक्षा के लिए भी यहाँ कोई व्यवस्था नहीं है। सरकार की सात निश्चय योजना का एक पैसे की राशि भी इन तीनों गांव में नहीं पहुंची है। जबकि इस तीनों गांव में करीब 150 परिवार मुख्य रूप से पुजार जाति के हैं। यहाँ के निवासी जो धोधो पुजार, हल्लू पुजार सतन पुजार गनोली पुजार मिताली देवी बुधनी देवी इत्यादि ने बताया कि हम लोगों को देखने वाला कोई भी नहीं है इस गांव में आज तक एक कच्चा कुआं बना है जिसे सरकारी माना जाता है लेकिन नो ईट का पैसा मिला है मजदूरी और आज तक उमा पूरा भी नहीं हो सका है जिससे पूरे गांव को पानी की विकट समस्या से जूझना पड़ता है।

नहीं आया गांव में कोई पदाधिकारी और नेता



यूको बैंक भनरा मे बिचौलियां हाँवी: बैंक प्रशासन मौन

आमोद कुमार दूवे



चांदन प्रखण्ड के दर्दभारा सीमा पर भनरा यूको बैंक द्वारा वर्ष 2008- 2009 में केसीसी ऋण वितरण में बिचौलिए का प्रभाव अब खुलकर सामने आ रहा है। लोक अदालत के लिए लोगों को नोटिस मिलने के बाद बैंक में शिकायत करने वालों की भरमार हो

गई है। कुछ लोगों के नाम पर दो दो केसीसी के अलावे कई ऐसे भी शिकायतकर्ता मिले, जिन्होंने पैसा नहीं लेने की भी बात कही है। लेकिन उसे नोटिस थमा दिया गया है। सिलजोरी पंचायत के पेलवा ग्राम निवासी भोला दास को दो बार केसीसी का लाभ दिया गया। जिस ने बताया कि दोनों में दस दस हजार की राशि निकासी हुई लेकिन पांच पांच बैंक द्वारा सिक्योरिटी मनी का के रख लिया गया। जबकि अब 77 हजार का नोटिस भेजा गया है। जबकि उसी गांव के तुलसी दास को 42 हजार

का नोटिस है। जिसने कोई भी पैसा लेने से इंकार किया है। ऐसी प्रकार की कई दर्जन शिकायतकर्ता मुखिया, मैडिया, और बैंक का चक्कर लगा रहे हैं। वही यूको बैंक के शाखा प्रबंधक गौरब कुमार ने बताया कि आधार लिंक नहीं होने से पूर्व गलत शपथपत्र देकर दुबारा केसीसी लिया गया है। पर पूर्व में बिचौलियों द्वारा कुछ हेरफेरी हुए हैं। फिर भी किसान को सरकार माफी के नाम पर काफी राहत दे रही है।



पोषण अभियान की सद्भावना दूत बनी गोल्डेन गर्ल श्रेयसी सिंह

राजेश पंजिकार(ब्यूरो चीफ)

नारी शक्ति की प्रमाणिकता को प्रमाणित कर होनहार प्रतिभावान निशानेबाज श्रेयसी सिंह ने कॉमन वेल्थ गेम मे अव्वल निशानेबाजी कर अर्जुन पुरस्कार प्राप्त किया श्री श्री सिंह अर्जुन पुरस्कार पाने वाली बिहार की पहली महिला है जिस ने भारत के साथ-साथ बिहार का नाम रोशन कर विश्व पटल पर एक अमिट छाप बना लिया है हम सभी बिहार वासियों को गर्व है ऐसी बेटियों पर जिन्होंने ऐसे होनहार और प्रतिभावान नारी शक्ति पर जिन्होंने यह शुभ दिवस दिखाया इसी क्रम में महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के हाथों दिनांक 25 सितंबर 2018 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित सम्मान समारोह मे श्रेष्ठ को अर्जुन पुरस्कार से नवाजा गया इस प्रकार को प्राप्त करने के साथ ही साथ बिहार की पहली महिला खिलाड़ी बन गई साथ ही यह पुरस्कार से नवाजे गए चौकी खिलाड़ी है जिसने यह पुरस्कार प्राप्त किया

कौन है श्रेयसी सिंह?

जमुई जिले के गिर्दौर की श्रेयसी सिंह पूर्व रेल राज्यमंत्री स्वं दिग्विजय सिंह एवं पूर्व सासद पुतुल कुमारी की छोटी बेटी हैं श्रेयसी अपने स्वं पिता के आरद्धो एवं मां पुतुल कुमारी के आशीर्वाद को ही अपनी प्रेरणा श्रोत मान कर निरंतर अपने पथ पर अग्रसर होकर सफलता की नित्य नई उच्चार्ड्यों को छू रही हैं। इस क्रम मे इन्हेएकऔर उपल्वधि प्राप्त हुई जव विहार सरकार के समेकित बाल बिकास सेवाएँ निदेशालय सह समाज कल्याण बिभाग के द्वारा पोषण अभियान के तहत इन्हे सद्भावना दूत के रूप मे नियुक्त किया।इसीक्रम पोषण पखवाडा के तहत पोषण मेला का शुभारंभ करने वांका पहुंची थी श्रेयसी स्थानीय नगर परिषद स्थित नगर भवन मे अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह का शुभारंभ फीता काट कर एवं दीप प्रज्ञालित कर जिलाधिकारी कुदन कुमार पुलिस अधीक्षक महेदया स्वपना जी मेश्राम ने संयुक्त रूप से किया।इस कार्यक्रम का शुभारंभ पुलिसअधीक्षक महेदया के द्वारा अपने उद्बोधन से किया गया।जिन्होंने महिला दिवस पर ख्याति प्राप्त बिहार की बेटी को अपने बीच पाकर गर्व का अनुभव करते हुए पोषण अभियान के तहत सद्भावना दूत बनने की शुभकामनाएँ दी।जिलाधिकारी ने अपने उद्बोधन मे कहा कि आज हमे खुशी है कि पोषण सद्भावना दूत के रूप मे श्रेयसी यहां उपस्थित है इनकी उपल्वधियो के लिए इन्हे शुभकामनाएँ देता हु साथ ही कुपोषण को दूर करने की पहल पर भी ऐसे सद्भावना दूत से लोगों मे जागृति आएगी।जिलाधिकारी ने आगे बताया कि आज हमारे समाज मे महिलाएँ इससे ज्यादा प्रभावित रहती है जिसका आने बाले भविष्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है,इस संदर्भ मे हमे जीगरुक हेने की जरूरत है साथ ही सरकार के स्वास्थ्य बिभाग बाल बिकास बिभाग



चर्चित बिहार से विशेष साक्षात्कार के दैरान श्रेयसी सिंह



बिहार सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों ने मोगेटो देकर सद्भावना श्रेयसी सिंह को समानित किया

एवं पंचायती राज विभाग एवंअन्य संस्थाओं के द्वारा भी सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं। श्रेयसी ने भी अपने संवाधन मे कहा कि स्वस्थ समाज के लिए काम करने वाली हमारी आंगन वाडी सेविका आशा,ए.एन.एम.व संबंधित महिला पदाधिकारियों को उनके सवस्थ जीवन की कामना करती हुं।साथ ही महिला दिवस की भी शुभकामनाएँ दी।इसीक्रम मे चर्चित बिहार से खास मुलाकात(बात- चीत) मे श्रेयसी ने कहा कि कुपोषण मानव जीवनके बिकास मे एक प्रमुख बाधाएँ हैं।इससे हमारी महिलाएँ सब से ज्यादा प्रभावित हैं,जरूरत है इसके लिए मुहिम छेड कर जागरूकता पैदा करने की,आज पोषणअभियान का एक बर्ष पूरा हुआ है।इसके उपलक्ष्य पर भारत सरकार के द्वारा पूरे देश मे पोषण पखवाडा आयोजित कर स्वास्थ्य,पोषण एवं स्वच्छता के क्षेत्र मे किये जा रहे साकारात्मक प्रयास से इसपे गति प्रदान की जा रही है।चर्चित बिहार ने उन्हे सद्भावना दूत पोषण अभियान के लिए नियुक्त करने पर जागृति किस रूप मे कैसे आ सकती है तथा इस पर आप(श्रेयसी) की क्या पहल होगी ? के बिषय मे बताया कि मुझे खुशी है कि पोषण अभियान के एक बर्ष पूरा होने के ठीक दो दिवस पूर्व ही मुझे बिहार सरकार के समाज कल्याण बिभाग के द्वारा पोषण अभियान के सद्भावना दूत के रूप मे जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ।इसके लिए बिहार के सुदूर गांवों मे जाकर इससे मुक्ति दिलाने हेतु पहल करूंगी सरकार के अंग इस प्रशिक्षण मे हमारे सांख्य रहेंगे आंगन वाडी केन्द्रो पर विशेष जागरूकता शिविर के लिए बिभाग को निर्देशित करूंगी जिससे कुपोषण से लगा जा सके और आने बाले भारत के भविष्य स्वस्थ एवं स्वल हो सके और खास कर महिलाएँ निरोग रह सकें।



महिला दिवस पर स्थानीय नगर भवन मे दीप प्रज्ञालित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते श्रेयसी सिंह, डीएम व प्लांटी

बर्णवाल समाज ने मनाया परिवार संग होली मिलन समारोह : राधा कृष्ण, शिव पार्वति के रूप में

मनोरम दृश्य की दिखी झालक

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)

कटोरिया- के बर्णवाल समाज के द्वारा होली के अवसर पर परिवार सह होली मिलन समारोह का भव्य आसोजन तरपतिया स्थित बंका जी धर्मशाला में दिनांक 17.3.2019 को किया गया।इस अवसर पर हजारों की संख्या में बर्णवाल समाज की महिलाएं एवं पुरुष एवं बच्चे उपस्थित थे।कार्यक्रम का शुभारंभ अहिवर महाराज के तस्वीर पर माल्यार्पण केउपरान्त समिति के अध्यक्ष रविन्द्र उर्फ टिंकु बर्णवाल व अन्य सदस्यों के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया।इस परिवार मिलन समारोह में समाज के सभी लोग महिला पुरुष एवं बच्चे बुजुर्ग का धनबाद के मुञ्जुकल ग्रप के द्वारा शान दार नृत्य एवं गायन प्रस्तुत कर भावविभोर कर दिया।इस सास्कृतिक कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुतिसे एक ओर जहां सभी लोग उत्साहित थे वही दूसरी ओर बर्णवाल समाज के बच्चे बच्चीयों के द्वारा स्टेज पर कला का प्रदर्शन अपनेआप मेएक अनोखी पहल थी।क्योंकि इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभा वान कलाकारों का जो बर्णवाल समाज के ही बच्चे हैं के प्रतिभा कोउजागर करने का अवसर प्राप्त हुआ,जिसे समाज के सभी सदस्यों ने एक साथ देखा।

बर्णवाल समाज की ही नृत्य के लिए प्रिया राज को प्रथम,सिमरन को द्वितीय एवं आकांक्षा कुमारी को तृतीय पुरुस्कार से स्मानित किया गया।इस कार्यक्रम में कलाकारों द्वारा राधा- कृष्ण ,शिव - पार्वति के रूप में



बर्णवाल समिति के अध्यक्ष को खौद वर्णवाल को गोबर्णेटो टेकर समानित करते सदस्यगण



सास्कृतिक कार्यक्रम में दर्शकों का गन गोहते कलाकार



शान दार नृत्य एवं गायन प्रस्तुत उपस्थित दर्शकों को मंत्र मुग्ध रर दिया।समिति के अध्यक्ष रविन्द्र उर्फ टिंकु बर्णवाल ने चर्चित विहार को बताया कि समाज के लोग आपस मे एक जुट होकर रहने की अपील की साथ ही शांति और सौहार्द पूर्वक होली का त्योहार मामाने की अपील करते हुए रंगोत्सव पर सबों को ढेर सारी शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हुं।साथ ही उन्होंने युवाओं का आह्वान कर कहा कि अपनी प्रतिभा को निखार कर समाज और देश का नाम रौशन करें।होली पर्व आपसीप्रेम और भाईचारा का प्रतीक पर्व माना जाता है क्यों इसी पर्व मे गिला सिकवा भुला लोग रंगोत्सव आनंद से मनाते हैं।

इसअवसर पर कई गण्य माण्य मे से विहार प्रदेश बर्णवाल समिति के उपाध्यक्ष औंकारानाथ बर्णवाल, बर्णवाल समिति देवघर के सचिव आदित्य बर्णवाल, व दीनदयाल बर्णवाल,, रामविलास बर्णवाल, अनिल बर्णवाल, गहुल बर्णवाल, अरुण बर्णवाल, शेरु बर्णवाल सहित काफी संख्या मे बर्णवाल समिति के सदस्य उपस्थित थे।

सरकारी उदासीनता के कारण पेय जल संकट गहराया ,नल-जल योजना भी टॉय-टॉय फीस

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)



कटोरिया प्रखंड में इन दिनों पेयजल का संकट काफी बिकराल रूप ले लिया है.एक ओर जहां सरकार की योजनाओं का बखान उनके अधिकारी करते हैं जिस पर सरकार की कितनी राशि खर्च होती है वही प्रखंड के धोरमारा पंचायत में पंचायतवासीयों के कंठ सूख रहे हैं बिभाग की लापरवाही से क्षेत्र के अधिकांश चापाकल महिनों से खराव पड़ा है जिसकी सुधि लेनेवाला कोई नहीं है.इस समस्या से तंग आकर पंचायत के मझला डीह गांव के लोगों ने बिभाग के बिरुद्ध जमकर विरोध प्रदर्शन एवं नरे बाजी की.

मौके पर पहुंची चर्चित बिहार की टीम ने जव पंचायत वासीयों के समस्या के विषय में जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि.हमसभी की यह गंभीर समस्या है कि पीने हेतु एवं अन्य कार्यों खाना बनाने स्थान करने हेतु चापाकल महिनों से बंद पड़ा है जिस कारणदो मील जाकर नदी से पानी लाकर जरूरत पूरी करते हैं. किसी चापाकल का हैंडिल खराव है तो किसी का पाईप फटा हुआ है.पंचायत के मुखिया नीरज कुमार से इन समस्याओं के

मौके पर पहुंची चर्चित बिहार की टीम ने जव पंचायत वासीयों के समस्या के विषय में जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि.हमसभी की यह गंभीर समस्या है कि पीने हेतु एवं अन्य कार्यों खाना बनाने स्थान करने हेतु चापाकल महिनों से बंद पड़ा है जिस कारणदो मील जाकर नदी से पानी लाकर जरूरत पूरी करते हैं.

निजात के उपय पूछा तो उन्होंने कहा कि इस समस्या के लिए बिधीगीय अधिकारी को बार बार कहने पर भी कोई असर नहीं हो रहा है.कॉर्डियार खुद जिला कार्यालय

जाकर समस्या से बड़े अधिकारी को अवगत कराया तो संसाधन की कमी का रोना रोते हुए अश्वासन ही देकर रह जाते हैं.

बहरहाल अगर इस समस्या का त्वरित समाधान नहीं हुआ तो लोग जनआन्देलन पर आमंदा हो जाएंगे.धोरमारा पंचायत के केवट टोला में इस समस्या से जो सर्वसेविक प्रभावित है वे राम कापरी,चानो देवी,पुरुषी देवी,पिंकी देवी सुगनी देवी,तारो मरिक ठुडो कापरी आदि प्रमुख हैं.

धोरमारा पंचायत के अधिकारी चापाकल बेकार पड़े हैं किसी का हौडिल खराव है तो किसी का पाइप फटा है.बिभाग कोइसकी सूचना देने पर भी इस समस्या का समाधान नहीं हो सका है.

नीरज कुमार

नुखिया, ग्राम पंचायत -धोरमारा
(कटोरिया-) जिला- बांका



बांका लोक सभा चुनाव 2019

मौका मिला है, अब बता देंगे किसका साथ निभाएंगे हम

राजेश पंजिकार(ब्लूरो चीफ)

बांका संसदीय क्षेत्र में मतदाताओं के अंतःकरण की भावना अभी दिलवाले फिल्म के इस गाने के साथ बिलकुल सही मैच कर रही है, गाना है कि मौका मिलेगा तो हम बता देंगे हम कितना प्यार करते हैं सनम इस परिपेक्ष में भावनात्मक स्नेह और भावनात्मक लगाव एक दूसरे अर्थात् मतदाताओं और प्रत्याशियों के बीच का सामंजस्य किस रूप में प्रदर्शित होता है यह मतदाताओं के अंतःकरण का उद्गार प्रेम या क्रोध इस गाने के साथ मैच खा रही है कि इस बार फिर मौका मिला है और अब हम बता देंगे कि किसके साथ हम जाएंगे यह मन की प्रतिक्रिया हमारे बांका संसदीय क्षेत्र के लिए फिट बैठता है।

चर्चित बिहार पत्रिका ने बांका लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं के मन की प्रतिक्रिया को टटोलने की कशीश की है इस क्रम में चर्चित बिहार की टीम विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में मतदाताओं के मन की बात को समझने उसके भावनाओं को जानने की कोशिश की है कि समय में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है या क्या वह समय में परिवर्तन चाहते हैं या किस उद्देश्य से लोकतंत्र के इस महापर्व में वे शामिल होंगे इस क्रम में हमारी टीम सर्वप्रथम कटोरिया विधानसभा का दौरा किया इस क्रम में यहां के बुद्धिजीवी मतदाताओं से संपर्क साधा तो इस क्रम में उन्होंने अपनी अपनी अलग अलग प्रतिक्रिया व्यक्त की है जो पूर्ण रूप से प्रदर्शित करती है कि सचमुच इस बार मौका हमें मिला है तो हम जरूर बता देंगे कि बाका का भविष्य क्या होगा इस क्रम में हमने मतदाताओं की प्रतिक्रिया को आप पाठकोंक पहुंचाने का प्रयास किया है प्रस्तुत है इसके कुछ अंश:-

कटोरिया- विधान सभा क्षेत्र इस महा समर में कटोरिया विधान सभा क्षेत्र के मतदाताओं की प्रतिक्रिया भिन्न रूप में आई है. कटोरिया विधान सभा में सांसद कोटे से अधिकांश पुल पुलिया का निर्माण होना, सड़कों का चौड़ी करण आर्दश गांव कोल्हासार सांसद के गोद में होना, साथ ही क्षेत्री विधायक राजद से होना, सुदूर आदिवासी, एवं दलित क्षेत्रों में बिकास की रौशनी पहुंचाने में महती भूमिका निभाने बाले बर्तमान सांसद ने इस क्षेत्र की जनता पर बहुत भरोसा और बिश्वास किया है. क्या है इनकी मंशा जानिये।

प्रदीप गुप्ता मुखिया ग्राम पंचायत कटोरिया (जिला - बांका)



कटोरिया- विधान सभा क्षेत्र में बिकास का काम बहुत हुआ है इसबात से इनकार नहीं किया जा सकता लेकिन कुछ खास वर्गों समुदाय को खुश करने हेतु भी कुछ योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया पूर्व के सांसद गिरिधारी यादव के समय में भी और अभी के सांसद के कार्यकाल में भी आजादी से अभी तक इसी प्रखंड के दलित पिछड़ा. गांव छाता कुरुम से पुलिया का निर्माण नहीं हो सका है, कटोरिया पंचायत में सांसद कोटे से एक सामुदायिक भवन का भी निर्माण कराया गया लेकिन सही स्थल का चयन एवं सही खरखाव के चलते वह सफेद हाथी सिद्ध हो रहा है. पुल

- पुलिया तो केन्द्र सरकार की योजना होती है इस योजना से सभी वर्ग समदाय के लोगों को लाभ मिलनी चाहिए, अपितु मौका मिला है समय ही बताएगा कि इस बार क्या होने बाला है. मेरे मतदान करने का उद्देश्य होगा विकास।

**नीरज कुमार, मुखिया,
ग्राम- पंचायत धोरमारा(कटोरिया)**



इसबार चुनाव में हम मतदाताओं ने यही शपथ ली है कि बिकास और सामाजिक उत्थान के उद्देश्य को आधार बना कर मतदान करेंगे।

सांसद समूचे संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं और हम मुखिया लोग भी पंचायत का प्रतिनिधित्व करते हैं अतः सांसद कोटे के योजनाओं का लाभ का अंश प्रत्येक पंचायत में जानी चाहिए. जिससे समग्र बिकास प्रदर्शित हो अतः मौका मिला है इस बार समय आने पर हमलोग बता देंगे कि हमरी क्या मंशा थी।

**आशा गुप्ता, पूर्व मुखिया,
ग्राम पंचायत कटोरिया- (बांका)**



लोकतंत्र के इस महापर्व में इसबार हम महिलाओं की भागीदारी भी सरकारी योजना का लाभ एवं सम्प्रग बिकास का होगा। कटोरिया- आदिवासी वाहुल क्षेत्र रहने के कारण सूटूर गांवों में आज भी बिकास की किरण नहीं पहुंच पाई है कुछ खास वर्ग की महिलाएँ आज भी जंगल में पते चनकर पतल बनाकर अपना गुजर बसर करती हैं . जरूर है ऐस प्रतिनिधियों का जिनके पहल से इस क्षेत्रों में खुशहाली आ जाए. हमें अपितु इस बार हमें पुनः मौका मिला है हम सम. पर बताही देंगे।

अमरपुर विधान सभा क्षेत्र प्रखंड शंभुगंज

बांका लोक सभा क्षेत्र के सबसे सक्रीय मतदाताओं खास कर सर्वं जाति से होने के कारण चुनावी समर में विभिन्न आयामों पर बिभिन्न मतदाताओं के भिन्न प्रतिक्रिया प्रस्तुत है इसके अंश।

भानू प्रताप सिंह, शंभुगंज(बांका)



लोकतंत्र के इस महापर्व में इस बार का मतदान विभिन्न आयामों पर जुड़ा होगा शंभुगंज प्रखंड के किसानों की माली हालत समुचित संसाधन जिससे किसान सिंचाई करें और सिंचाई साधनों की कमी इस पर प्रतिनिधियों का जो उदासी करण उजागर हुआ है जिससे क्षेत्र के किसान बहुत ज्यादा प्रभावित होते आए हैं खासकर वैसे किसान जो कृषि हेतु सिंचाई के लिए प्रकृति पर निर्भर करते हैं, उनके लिए संसाधनों की कमी जिससे प्रकृति का मार

झेलते लते हुए वह अत्यंत ही निष्क्रिय और निर्धन हो गए वर्तमान परिषेक्ष को देखते हुए हमारे जनप्रतिनिधियों के द्वारा इस विषय में हमेशा उदासीनता दिखाई गई है बांका अमरपुर इंग्लिश मोर से जिला मुख्यालय से बांका पथ खासकर इंग्लिश मोर से शंभूगंज पथ को यदि निहारा जाए तो वह विल्कुल ही रुंबुदा हो चुकी है किसान परेशान हैं और लोगों को आवागमन का उचित साधन नहीं मिल पा रहा है हाँ सांसद के कोटे से कुछ सड़क सड़क किनारे बने सामुदायिक भवन या विवाह भवन से तुच्छ लोगों को ही फायदा होता है परंतु विकास की किरण हर गांव में हर पंचायत में जानी चाहिए ऐसा हमारा नेता ऐसा हमारा सांसद हो अगर देखा जाए तो हम शंभूगंज के मतदाता बहुत ही कमजोर हैं हमारे क्षेत्र में जितने भी जो भी प्रतिनिधि सांसद अपने कार्य को गति देने के लिए सक्रिय हुए हैं वह काम कुछ समय के लिए अधूरा ही हुआ है बालू का उठाव भी क्षेत्र के किसानों के लिए एक अभिशाप बन गया है अपितु इस जर्जर सड़क की व्यवस्था और तंत्र की लापरवाही और प्रतिनिधियों का सही सामर्जस्य नहीं बैठने के कारण हम सभी मतदाताओं में ऊहायोह की स्थिति हो गई है अपितु मौका इस बार फिर मिला है ,समय आते ही हम बता देंगे लेकिन मेरे मतदान करने का उद्देश्य एक ही होगा क्षेत्र का समग्र विकास हमारा जो भी प्रतिनिधि इस फार्मर्लू को इस नियम को हमारे क्षेत्र के लिए लागू करेगा हमारे लिए वही एक सबल एवं स्टीक प्रतिनिधि होगा भी होगा। धोरेया विधान सभा क्षेत्र क्षेत्रीय प्रतिधित्व जदयू का है इस क्षेत्र में मतदाताओं की क्या राय है आईए जानें।

अवधेश कुमार, पीपराडीह रजौन (बांका)



धोरेया विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं की मुख्य मांग यह थी कि इस क्षेत्र में पड़ने वाले पिपराडीह हॉल्ट पर इंटरसिटी का ठहराव हो साथ ही सिंचाई हेतु समुचित साधन की व्यवस्था हो बालुउठाव से नदि के जलस्तर मेलगिरावट भी एक मूख्य कारण है आम मतदाता परिवर्तन चाहते हैं पिछले अकडे. के बनिस्पत जिस अनुपात में समस्त संसदीय क्षेत्र का विकास हुआ है उस क्रम में धोरेया विधानसभा क्षेत्र पीछे है इसक्षेत्र में विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ आम जनता को कम उपलब्ध हो पाया है इसका कारण क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व में राजद का होना भी माना जा सकता है जो कि संसदीय क्षेत्र में जो विकास की बातें होनी होती है वह समस्त संसदीय क्षेत्र के लिए होती है और हमारे जो नेता होते हैं इसके लिए उत्तरदार्द होते हैं लेकिन अभी वर्तमान समय में जो हमारे धोरेया विधानसभा क्षेत्र का व्यवस्था है वह विकास से कोरोना दूर है इसलिए हम लोग परिवर्तन चाहते हैं समय आएगा मौका मिला है इस बार हम समय पर इसका जवाब देंगे और यह समय ही बताएगा कि परिणाम क्या होगा।

बेलहर विधान सभा क्षेत्र

बेलहर विधान सभा क्षेत्र के बारे क्या कहना कई बार भाजपा ने अपना भाग्य आजमाना चाहता सफलता नहा मिली .अब जवाकि जदयू प्रतिनिधित्व एवं यही के क्षेत्रीय विधायक को लोकसभा के लिए टिकट मिला है गिरिधारी यादव जी इस क्षेत्र के मतदाताओं की क्या राय है आईए जाने

सरयू प्रसाद यादव, मतदाता

लिखनीकोड़ी, बेलहर विधान सभा क्षेत्र



इस क्षेत्र मे बिकास की गति बहुत कम है. सांसद महोदय के द्वारा अश्वासन ही मिलता रहा इस क्षेत्र मे उनका दौरा भी कम हुआ ,पुल पुलिया कि स्थिति भी रख रखाव के कारण भी जर्जर हो गया है.इसबार हम लोग परिवर्तन चाहते है अपितु मौका मिला है समय पर इसका जवाब देंगे। के खाते मे है यानी सहयोगी दल बांका संसदीय सीट से गिरिधारी यादव जी चुनाव लड़ रहे आईएवजने लोगों की प्रतिक्रिया। बांका मे इसबार मतदान कई मुद्दों को ध्यान मे रखते हुए होगा पहला सांसद कोटे से क्षेत्र का बिकास तथा सांसद द्वारा किसानों को दी जाने बाली सुविधा मुहैया कराना .इस मामलों मे बांका विधान सभा क्षेत्र मे सांसद कोटे से

बिकास नगन्य है.हमे ऐसे सांसद की जरूरत है जो जाति पाती से उपर उठकर क्षेत्र के बिकास के लिए कार्य करे अपितु मौका हमे इसबार पुनः मिला है हम समय पर यह बतादेंगे।

काशी राम डोकानिया, अलीगंज बांका



बहरहाल अब देखना यह है कि बांका के बाकुडे. कौन बनेंगे सरताज किसके मस्तक पर सजेंगा। बिकास की बाते हर बार करने बाले इन नेताओं के लिए जनता क्या सोच कर मतदान करेगी। क्या जातीय समीकरण हॉवी होगा या दलीय नीति के आधार पर सत्ता पक्ष के उमादवारों को ही इसका लाभ मिलेगा.भाजपा से नाराज चल रही और स्वतंत्र उमीदवार के रूप मे लेकिन नरेन्द्र मोदी की गुनगान करने बाली पुतुल कुमारी को बांका की जनता स्वीकारेगी यह समय ही बताएगा .फिलहाल 18 अप्रैल मतदान की तिथि के इंतजार मे है बांका की जनता। चलो उठो तुम धीर पुरुष हो ,समय ने तुम्हे पुकारा है.धरती के तुम प्रल्लव पुष्प हो सारा हिन्दुस्तान हमारा है फिर भी हर पल हर क्षण उद्घेलित मन को देता कष्ट बिषम है इसी लिए संसार बड़ा धोखा है भीषण भ्रम है.

चलो उठो तुम धीर पुरुष हो ,समय ने तुम्हे पुकारा है.धरती के तुम प्रल्लव पुष्प हो सारा हिन्दुस्तान हमारा है फिर भी हर पल हर क्षण उद्घेलित मन को देता कष्ट बिषम है इसी लिए संसार बड़ा धोखा है भीषण भ्रम है.

बाहरी भगाओ बांका बचाओ मुहिम को सफल बनाएं

राजकिशोर उर्फ पापू यादव

झामुम, बांका



देश में मजबूत सरकार के लिए एनडीए प्रत्याशी के पक्ष में करें वोट



मेडामोड मैदान में आम सभा को संवेदित करते उप मुख्य मंत्री सुशील कुमार मोदी, गंगी राम नारायण गंडल प्रत्याशी गिरिधारी यादव व अन्य

हेमंत कुमार/ बाराहाट

देश पर दशकों तक गरीबों के साथ मजा किया जाता रहा है गरीबी के नाम राजनीति करने वाले लोग गरीबों को गरीबी रहने देना चाहते हैं वह अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए समय-समय पर कागजी घोड़ा दौड़ाते हैं जिसे अब जनता जान चुकी है आज देश का नेतृत्व एक चौकन्ना चौकीदार के हाथ में है जो आंखों में आंखें डाल कर बात करना जानता है उक्त बातें रविवार को क्षेत्र के भेड़ा मोड़ मैदान में आयोजित एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहीं उन्होंने अपने चुनावी संबोधन के दौरान एनडीए के कार्यकाल में उज्जवला योजना से लेकर पुलवामा हमले के बाद हुए पाकिस्तान के खिलाफ एयर स्ट्राइक का भी जिक्र

उन्होंने इसके बाद मैदान में मौजूद भीड़ की तरफ नारा उछलते हुए कहा कि आपको मजबूत सरकार चाहिए या मजबूर सरकार जिसके बाद लोगों ने उन्हें हाथ उठाकर समर्थन का भरोसा दिलाया जिसके बाद मंचासीन नेताओं ने एनडीए के उम्मीदवार गिरधारी यादव को माला पहनाकर बीएससी होने का आशीर्वाद दिया वहीं मंचासीन राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री रामायण मंडल ने इशारों ही इशारों में विपक्षियों पर निशाना साधा कहा लोग अब लालटेन युग को भूल चुके हैं। उन्होंने लालटेन को गंगा में प्रवाहित कर दिया है अब लोग एलईडी बल्ब पर आ गए हैं वहीं उद्योग मंत्री जय सिंह ने बाका से एनडीए से बगावत कर निर्दलीय चुनाव लड़ रहे लेकिन उन्होंने जाती पाती से ऊपर उठकर लोगों से देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आगे रखकर बोट करने की अपील की मौके पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष विकास कुमार सिंह लोजपा के जिला अध्यक्ष देवी यादव जदयू के जिला अध्यक्ष ओम प्रकाश मंडल भारतीय जनता पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष सुभाष साह जदयू के प्रखंड अध्यक्ष निखिल।

किया। उन्होंने इसके बाद मैदान में मौजूद भीड़ की तरफ नारा उछलते हुए कहा कि आपको मजबूत सरकार चाहिए या मजबूर सरकार जिसके बाद लोगों ने उन्हें हाथ उठाकर समर्थन का भरोसा दिलाया जिसके बाद मंचासीन नेताओं ने एनडीए

..... युवाओं का सूर्योदय...



राहुल, बांका

हलाहल तमस के तामस
को चीर गई स्वर्ण किरण
काल की कला से कालित
लुप्त था भविष्य स्वर्ण गर्वभित।

साध कर अपने अश्वों को
बांधकर उसे पाश्वों से जो
दिव्य ध्वज दिव्य रथ पर
आरूढ़ हो दिवाकर निकला।

बंधे थे अश्व उनके
दिव्य पाश्वों से जो

खा गए मरुतगण को भी
दिवाकर तो प्रभाकर निकला।

एक रवि सा मैं भी कवी
अश्व भागे पाश्व छूटे
बिना ध्वज शिखा का ही
रथ लिए मैं खड़ा था कहीं

ढीले पारश्वों के बंधन से
अश्व चले चरित्र तृन को
बिना शास्त्र अस्त्र-शस्त्र का
आरूढ़ हो जो कवी निकला।

मन में था अहंकार
दिखा अलंकार करे गर्जना
कहे ये तामस मिटा दूंगा
इन मरुतगण को जला दूंगा।

बिना चरित्र बिना चिंतन के
राष्ट्र ध्वज को छोड़कर
कहो कैसे जगे हमारा
यह भविष्य स्वर्ण गर्वभित॥



रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे
के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

**नीरज कुमार
मुखिया**
ग्राम पंचायत -धोरमारा
प्रखंड - कटोरिया-
जिला- बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड़ प्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

श्रीमती आशा गुप्ता, पूर्व मुखिया

एवं प्रदीप कुमार गुप्ता

मुखिया, ग्राम पंचायत कटोरिया
जिला, बांका



जिलाध्यक्ष कल्याणपुर समस्तीपुर की ओर से होली की हार्दिक शुभकामनाएँ



नोनो फिरोज
लोहिया
अल्पसंघ्यक
प्रकोष्ठ



समस्तीपुर तमाम जिलवासियों को रामनवमी की ढेर सारी शुभकामनाएँ

आरती देवी प्रमुख प्रखंड

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड़ प्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ



मृत्युंजय राय

बांका लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र के कर्मठ एवं बाका के लाल को ब्लैक बोड छाप पर अपना कीमती मत देकर भारी मतों से विजय बनावें

समस्तीपुर की ओर से तमाम जिलवासियों को रामनवमी की ढेर सारी शुभकामनाएँ



सूरज कुमार

सदस्य, भागीरथपुर
पंचायत समिति

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड़ प्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ



उत्तम
कुमार
नियाला
बांका



डॉ बलराम
मंडल
D.E.H(Regd no 23631
ग्राम- योगीडीह
(दुधारी) बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड़ प्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ



डॉ. पुण्ड्रिनी
बीडीएस
दंत चिकित्सक
कटोरिया रोड,
बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



पंकज कुमार

कार्यक्रम पदाधिकारी
मनरेगा - कटोरिया
जिला बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



गोरिंद राजगढ़िया बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



आचार्य रघुनंदन शास्त्री

आवासीय मार्शल
एकेडमी, खेसरा,
बांका, मो.: 8002850364

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ लक्ष्मण पंडित

एम.एस. सर्जरी
सदरअस्पताल
बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



रवि राजन

जिला निबंधन
पदाधिकारी
बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



सुधीला धन

बाल विकास
परियोजना
पदाधिकारी,
बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



मानोजप्रताप सिंह

प्रखंड कॉर्गेस
अध्यक्ष, शांभुगंज
जिला बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



सर्यु प्रसाद यादव

अध्यक्ष कुसाहा
वन समिति
जिला- बांका

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं



डॉ मौलेश्वरी सिंह विद्याभूषण

M.H.M.B.B.S. (Darbhanga)
R.M.P.H. (Patna), D.C.P. (Ranchi)
Regd. No. 16261 दुधारी
बांका, मो. 9955601568

रामनवमी, महावीर जयंति, अम्बेदकर जयंति एवं गुड फ्रायडे के अवसर पर समस्त जिलवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

महादेव इनकलेव प्रा. लि.



अमर सिंह रथौर

जी. एम

महादेव इनकलेभ प्रा. लि.



24 घंटे एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध



आर. पी.सिंह

जी. एम

महादेव इनकलेभ प्रा. लि.

जय अहिंसा !

दर वर्दमाल !

परिवार मिलन समारोह

दिनांक : 17 मार्च 2019 (विवार)

बरनवाल सेवा समिति, कटोरिया

आपका हार्दिक
अभिनन्दन करती है

होली पर्व के अवसर पर परिवार मिलन समारोह का भव्य आयोजन तरपतिया धर्मशाला में वर्णवाल समिति कटोरिया- द्वारा दिनांक 17.03.2019 को किया गया इस कार्यक्रम का शुभारंभ समिति के अध्यक्ष रविंद्र उर्फ टिकु बर्णवाल एवं अन्य सदस्यों द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर इस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया.



नरेन्द्र मोदी जिंदावाद

नितीश कुमार जिंदावाद

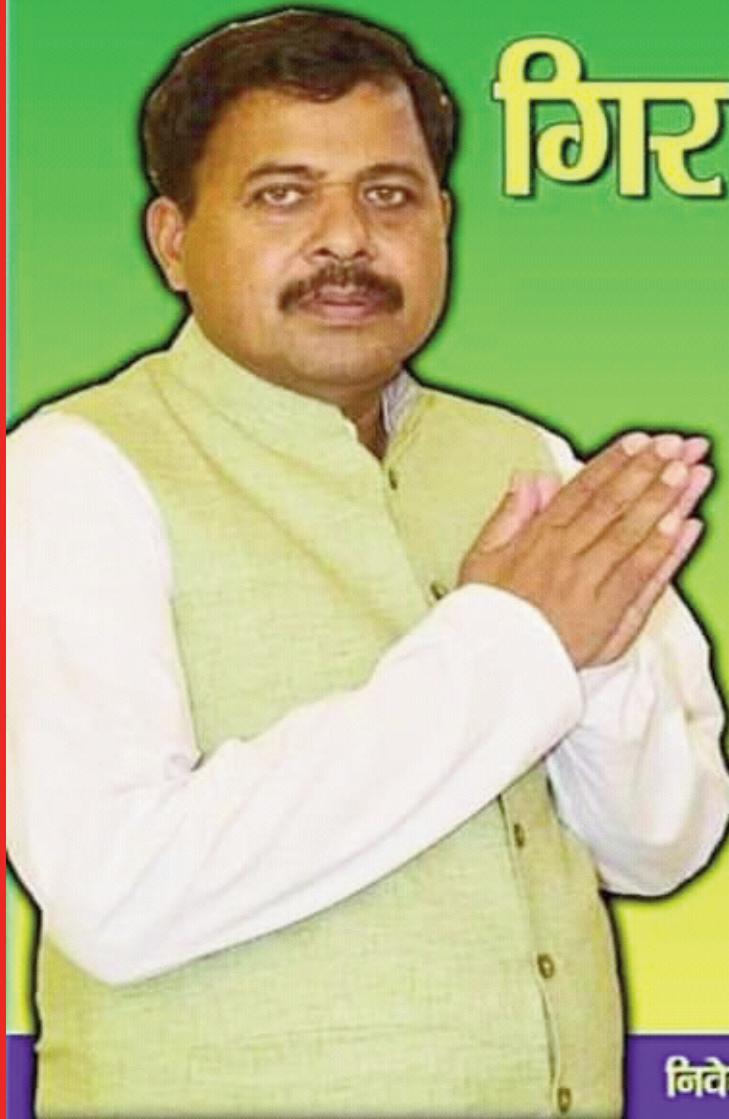
रामविलास पासवान जिंदावाद



बांका की है एक ही शुक्रार, गिरधारी यादव ही अबकी बार...

बांका लोकसभा
निर्वाचन क्षेत्र से एन.डी.ए.
के कर्मठ एवं संघर्षशील उम्मीदवार

गिरधारी यादव
के चुनाव विन्ह



तीर छाप
के सामने बटन
दबाकर विजयी
बनावें।

निवेदक :- समस्त बांका लोकसभा की जनता



हेमलता सोरेण जिल्हावादी

बालू तक लुट लिया बांका का, और लुटा विश्वास।
कितने चुनाव देख लिये, फिर भी न हुआ बांका का विकास।



हेमलता सोरेण जिल्हावादी

बाहरी भगाओ बांका बचाओ!

बांका की मजबूरी, पप्पु यादव जरूरी!!!

27, बांका लोकसभा क्षेत्र से झारखण्ड मुक्ती मोर्चा

सूयोग्य, कर्मठ, प्रत्याशी

चुनाव



चिन्ह

क्रम सं.-7

अलमारी निशान



राज किशोर प्रसाद

उर्फ पप्पु यादव का

पूर्व विधायक

पट नीला बट्टा दबाकर भारी से भारी मतों से विजयी बनायें।

5000 रुपये

राष्ट्रीय जनता दल जिन्दाबाद !

महागठबंधन जिन्दाबाद !!



बाँका लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से जय प्रकाश नारायण यादव



को

चुनाव

चिन्ह



छाप पर बटन दबा कर
आरी मतों से विजयी बनावे

निवेदक : बाँका लोकसभा क्षेत्र के समस्त मतदातागण

दिग्विजय बाबू

अमर रहे ! अमर रहे !!

बांका के सम्मान में पुतुल कुमारी मैदान में

बांका लोकसभा क्षेत्र

से लोकप्रिय, कर्मठ एवं सुयोग्य
निर्दलीय उम्मीदवार

दिग्विजय बाबू

पुतुल कुमारी

के
चुनाव
विन्ह



गैस सिलेण्डर

छाप

पहले इवीएम के

क्रमांक-13

(तेरह) पर

गैस सिलेण्डर छाप पर बल द्वाकर भारी मतों से विजयी बनावें।

प्रकाशक -
अनिल कुमार सिंह